परोपकारी

परोपकारी जी मैं आपसे ही मिलना ता था!
अरे भटनागर तुम ! कैसे हो ? तुम्हारे फेफड़े कैसे हैं ?

तुम्हारे ही कहने पर मैंने सिगरेट पीना छोड़ दिया और अब काफी आराम है।
अच्छा किया तुमने। तुम्हें अब फेफड़ों की वर्जिश भी करनी चाहिए। तुम्हें गाने का शौक है ना ?

हां, हां मुझे फिल्मी गानों का बहुत शौक है।
गुड ! तो रोज जोर-जोर से गाया करो फिर तुम्हें बुढ़ापे में फेफड़ों की तकलीफ कभी नहीं होगी।

शुक्रिया परोपकारी जी, आपकी बात मैं जरूर मानूंगा।

कुछ दिनों बाद
अरे भटनागर तुमने तो बताया ही नहीं कि गाना गाने से कुछ फायदा हुआ या नहीं।
अरे क्या कहूं परोपकारी भैया, मेरा गाना सुनकर पड़ोसी सब मेरे घर पर आ धमके और मुझे धमकी देने लगे कि अगर इसी तरह गाना गाता रहा तो बुढ़ापे में फेफड़ों की तकलीफ तो क्या बुढ़ापे की तकलीफ भी नहीं होगी, क्योंकि उससे पहले ही वे मेरा गला घोंट देंगे। मैं इतना बुरा गाता हूं क्या ?
THE NATIVE

बात-बे-बात की

बेटी, शादी से पहले यह तो पता करलो कि लड़का क्या काम करता है, उसकी कितनी -
जायदाद है, और कितना बैंक बैलेंस है
ओह पापा! आप उससे मिलकर
जरूर खुश होंगे! क्योंकि वह भी बिल्कुल यही बातें आपके बारे में पूछ रहा था!

दिनेश किशोर होतवानी, रायपुर (म० प्र०)
प्र० : बच्चा जन्म लेता है तो उसकी मुट्ठियां बंधी हुई क्यों होती हैं ?
उ० : जैसा है यह जमाना, वैसे जन्में लाल
एक मुट्ठी मुक्का समझ दूजी है हड़ताल।

भूपेन्द्र देवगुन, अन्धा मुगल दिल्ली
प्र० : ...का के ... की ...त कैसे जानी जा सकती है ?
उ० : क्यों हो रहे निराश तुम, बन करके दिल बाज,
एक्सरे करवाइए, खुल जाए सब राज।

सुरेन्द्र भाई आजाद, राजविराज (नेपाल)
प्र० : प्रेम के बिना जीवन कैसा रहता है ?
उ० : जैसे बिना करैन्ट के, व्यर्थ इलेक्ट्रिक तार,
सूनी है वह जिन्दगी, मिले न जिसको प्यार।

राजू भाटी, बीकानेर (राजस्थान)
प्र० : लड़की की बेवफाई से लड़का गुँडा बन जाता है तो लड़के की बेवफाई से ?
उ० : लड़का गुस्सा करे तो, लड़की आंख दिखाय,
यह गुंडा बन जा... गुंडी बन जाय।

सोहन अग्रवाल, नाहर... ...)
प्र० : पिताजी की मृत्... ...छें क्यों मुड़ानी पड़ती हैं ?
उ० : घर भर के आ... ...ता कर गए कूंच,
जिम्मेदारी की ... ...तीं दाढ़ी मूंछ।

बाल साथी दिनेश कुमार, वारिसलीगंज
प्र० : कर्मक़ाण्ड कराने वाला सिर पर कफन क्यों लपेटता है ?
उ० : थोड़ा टुकड़ा कफन का, दे जाता है बाप,
इससे आँसू पोंछ कर, रोता रह चुपचाप।

संजय कुमार गुप्ता, तपकरा (म० प्र०)
प्र० : काका जी, अगली होली पर आपका क्या कार्यक्रम रहेगा ?
उ० : जोड़ तोड़ की होड़ में, लगे हुए श्रीमान
केन्द्रिय होली देखकर, बने हमारा प्लान।

जगदीश पाठक, पिथौरागढ़ (अलमोड़ा),
प्र० : प्राचीन देवताओं की देवियां घूंघट क्यों नहीं काढ़ती थीं ?
उ० : बुरी नजर तब किसी पर, नहीं मारते देव,
परदा चालू हो गया, जब यह चली कुटेब।

रमेश डागा, झार्डा, (उज्जैन)
प्र० : कुँआरी को छेड़ा जाय तो थप्पड़ मारेगी, विवाहित को छेड़ें तो ?
उ० : थप्पड़-लप्पड़ छोड़कर, चप्पल स्वाद चखाय,
पति भी उसके साथ हो, तो जूते बरसाय।

पट्टी बोई, बग्गे सेहमी, दमोह (म० प्र०)
प्र० : एक कुत्ते के भौंकने पर, कई कुत्ते क्यों भौंकने लगते हैं ?
उ० : भौंक कम्पटीशन कहो, या कुत्ता संगीत,
मिले फर्स्ट प्राइज उसे, होवे जिसकी जीत।

दीपक ज्वलन्त, भागलपुर (बिहार)
प्र० : राजनारायण की पार्टी कब तक चलेगी, काका ?
उ० : तोड़ चुके सरकार दो, दाढ़ी रखकर आप,
कब तोड़ोगे तीसरी ! पूछ लेउ चुपचाप ?

इरशाद अहमद 'दिलकश', पानीपत
प्र० : जिन्दगी को खूबसूरत बनाने का उपाय ?
उ० : हास्य की साक्षात् मूरत है,
जिन्दगी उसकी खूब सूरत है।

बी० लाल अहमद कादरी, बीकानेर
प्र० : हम आपसे कोई प्रश्न पूछें तो काकी ज... ...राज तो होंगी ?
उ० : काकी, गंदे प्रश्न से हो जातीं ...ड़े,
हाय राम ! कहकर तुरत ... देयगी कार्ड।

दीपक प्रसाद, राजेन्द्र प्रसाद, वि...नगर (नेपाल)
प्र० : यह खत लिखा है खून ... स्याही न समझना,
हैं कोतवाल हमक... सिपाई न समझना।
उ० : कैसा है खून आप... खत लाल ही नहीं,
स्याही ये सिपाह...की है, कुतवाल की नहीं।

नारायण सचदेव, इ... (म० प्र०)
प्र० : मैं अपने जन्...दवस पर आपको इंदौर बुलाना चाहत...
उ० : हड़तालों ... सबब से, डाक चल रही लेट,
मिला प... जब जन्म की निकल चुकी है डेट।

अनिल कुमार ...लाटी, रेवाड़ी
प्र० : आप ...मारे प्रश्नों के उत्तर क्यों नहीं देते ?
उ० : ...मार कर व्यर्थ ही जमा रहे हो धाक,
प्रश्न, नहीं कुछ भी लिखा, उत्तर दें क्या खाक ?

कामेश कुमार, मदन महल, जबलपुर
प्र० : मैं, दीवाना के घसीटाराम से मिलना चाहता हूं ?
उ० : ऊपर से वह स्वीट है, भीतर से है ढीट,
बचो घसीटाराम से लेगा टाँग घसीट।

गनेश मित्तल, देहलीगेट, गाजियाबाद
प्र० : यदि इंसान पाप करना छोड़ दे तो ?
उ० : पाप-ताप-संताप में, फंसा आज इन्सान,
मुक्ति अगर इनसे मिले, बनजाए भगवान।

अलोक, पिंकी ग्रुप, खोया बाजार, कानपुर
प्र० : हम दोनों के लिए दो अदद लड़कियाँ बताइये ?
उ० : दो लड़के दो लड़कियां, मिलकर हों जब चार,
धम्मक धम्मा मचेगी, ज्यों जनता सरकार।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

काका के कारतूस
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह ज़...
नई दिल्ली-...

की आंखें एकाएक गुस्से से लाल और नथूने फूल गये···सांसें तेज- लगीं। उन्हें जब कभी गुस्सा वह जल्दी-जल्दी हुक्के के कश लेने स समय भी यही हुआ था। वह कश ले ही रहे थे कि उन्हें जोर लगा और हुक्का उनके हाथ से र जा गिरा···चिलम एक ओर और अंगारे इधर-उधर फैल गए। सीना थामकर बुरी तरह खांसने की आंखों से पानी बहने लगा और ड़बड़ाकर खड़ी हो गई।

राम! यह क्या हो गया?'

ाल भी घबराकर खड़े हो गए। ट आगे बढ़कर धर्मपाल की पीठ ोर से धप मारे और रामदेई से

ी से पानी ला कटोरे में।'

देई दौड़कर पानी ले आई। उसका थर-थर कांप रहा था···कंठ में अटक गया था···आंखें बार-बार ही थीं। उसका जी चाह रहा था खें मार-मारकर रोए—'हे भगवान् मेरे गले में डाल दे।' सोचते- मदेई की आंखें भीग गईं। यशपाल डिकल से धर्मपाल को पानी पिलाया ब जोर-जोर से उसकी पीठ सहला नपाल ... सांस अब जोर-से चलने ·फंदे का जोर टूट गया था। उसकी पीठ सहलाते हुए कहा— र बार कहा है कि हुक्का पीते मत किया करो···तुम्हें फंदा ोग है।'

'म···मैं···।' धर्मपाल क्रोधित स्वर ैं क्या जान-बूझकर गुस्सा करता ुम्हारी बहन है जो गुस्सा दिलाती दिन यह मेरे प्राण लेकर छोड़ेगी।'

-नहीं···' रामदेई कांपकर बोली, लिए ऐसा मत कहो—भगवान् ायु भी तुम्हें ही लग जाए।'

ाल!' यशपाल ने कहा, 'रामदेई एक शब्द भी नहीं कहा···तुम ह बिगड़ते हो।'

'मुझसे नहीं कहा, तुमसे तो कहा है।' धर्मपाल का गुस्सा अब तक कम नहीं हुआ था, 'तुम्हें तो बुलाया है, मुझे समझाने के लिए जैसे मैं दूध पीता बच्चा हूं···जमाने की ऊंच-नीच को समझता ही नहीं।'

'धर्मपाल! तुम जमाने की ऊंच-नीच को कुछ जरूरत से अधिक ही समझते हो।'

'भाई साहब···' धर्मपाल ने अपना गुस्सा दबाने का प्रयास करते हुए कहा, 'मैं जमाने की ऊंच-नीच को जरूरत से अधिक समझता हूं या कम···आप मेरे बड़े हैं इसलिए मैं आपके सामने कोई गुस्ताखी नहीं कर सकता···लेकिन क्या आपको यह नहीं मालूम कि हमारा खानदान कौन-सा खानदान है?'

'निःसन्देह···मालूम है भई' यशपाल ने गर्व से कहा, 'तुम्हारा खानदान सूर्यवंशी खानदान है···इस खानदान की धाक और इज्जत तो पास-पड़ोस के पचास गांव पर बैठी हुई है। जागीरदारी समाप्त हो गई लेकिन आज भी लोग आपको जागीरदार ही कहते हैं···उतना ही सम्मान देते हैं जितना कभी तुम्हारे पुरखों को देते थे—अरे भई हमने कुछ देखभाल कर···सोच-समझकर तो अपनी बहन का रिश्ता तुमसे किया था।'

'मानते हैं ना आप···' धर्मपाल ने अपने क्रोध को निरन्तर दबाते हुए कहा, 'और आपने चंद दिन पहले ही चंदनपुरी वाली घटना भी सुनी? वहां के मुखिया की दस वर्षीय बेटी को डाकू उठाकर ले गए थे···दस हजार रुपये की मांग थी उनकी। मुखिया ने निश्चित समय और स्थान पर रकम पहुंचा भी दी लेकिन मुखिया की बेटी किस हालत में मिली थी?'

'सुना है···' यशपाल ने गर्दन झुकाकर कहा, 'उन पापियों ने उसकी आयु का भी ध्यान नहीं किया था···जाने कितनों ने उसके साथ मुंह काला किया था···वह बेचारी हस्पताल पहुंचने से पहले ही मर गई थी।'

'मर गई थी···यह अच्छा हुआ···लेकिन फिर भी क्या मुखिया के दिल पर से यह घाव कभी हट सकता है?···उसे छोड़िए भाई साहब, आप ही के गांव में गंगा नाम की औरत है···क्या उस पर बीती घटना नहीं मालूम आपको?'

'मालूम है···बचपन ही से बहुत सुन्दर थी···बारह बरस की उम्र में ही कुछ दिल फेंक आवारा लड़कों ने उसे बलपूर्वक पक्के बाग में पकड़कर उससे मुंह काला कर लिया था।'

'और उसका परिणाम क्या हुआ था?'

'उसके स्वाभिमानी पिता ने आत्महत्या कर ली थी···मां दुःख से पागल हो गई थी और गंगा आज तक 'बेसवा' का जीवन बिता रही है।'

'यह और ऐसी कितनी ही घटनाएं आपको सुनाऊं···और याद दिलाऊं? इस पर भी आप कहते हैं कि मैं जो कुछ कर रहा हूं गलत है।'

यशपाल ने एक लम्बी और गहरी सांस ली···फिर बोले—

'तुमने यह घटनायें तो सुना दीं मगर तुम्हारे ही गांव की तो बात है कि पण्डित तुलसीराम ने अपनी ग्यारह बरस की बेटी के फेरे और गौना कर दिया था···वह बेचारी आज तक आंतों के ऐसे रोग में फंसी है कि जिसका इलाज ही नहीं हो पाता। तुम्हें अपने मित्र, रंजनगढ़ के दर्शनलाल की बेटी का वाकिया याद होगा···उन्होंने अपने देहांत से कुछ समय पहले अपनी बेटी के फेरे और गौना कराके अपना परलोक तो संवार लिया था···लेकिन उस बेचारी पर क्या बीती? उसकी आयु केवल दस बरस की थी···उसे भी बचपन से यह रोग लगा तो आज तक रोग नहीं गया। अट्ठारह बरस की आयु में उसने पहले बच्चे को जन्म दिया था जो उसका आखिरी बच्चा भी था···और तुम जानते हो वह बच्चा जन्म से लंगड़ा-लूला था?'

'भाई साहब।' धर्मपाल ने गम्भीरता से कहा, 'मैं सब कुछ जानता हूं···मुझे सब मालूम है···लेकिन यह जो घटनायें आप सुना रहे हैं यह बड़ों की भूल का नतीजा है···अगर बड़े सावधान रहते तो बात यहां तक न पहुंचती।'

'तो क्या तुम समझते हो कि तुम्हारे समधियाने वाले इस बारे में चौकस रहेंगे?'

शेष पृष्ठ १६ पर

● मां! "बेटे तुम बड़े होकर क्या बनना चाहोगे?"

बेटा! "दल बदलू।"

● शेखचिल्ली के सामने जटिल समस्या आई तो वह फ्रिज में जाकर बैठ गया और बोला, "मैं ठंडे दिमाग से समस्या का हल खोजना चाहता हूं।"

मोटू पतलू

पिछले दिनों किसी उपग्रह से एक अंतरिक्षयान यहां आया और यान में आये खोपड़ीनुमा प्राणियों ने मोटू-पतलू, डा० झटका, चेला राम और घसीटा राम का अपहरण कर लिया था। उन खोपड़ियों ने चेला राम को बहुत काम का आदमी समझा था और अपने उपग्रह को लौटते समय उसे अंतरिक्ष यान का पूरा कन्ट्रोल समझा दिया था। अंतरिक्ष में उनकी लड़ाई किसी अन्य ग्रह से आए स्पेसशिप से हुई थी। और चेला राम ने अपने अंतरिक्षयान का नियंत्रण सम्भाल कर यह लड़ाई जीत ली थी। और चालाकी से अपने अपहरण कर्ता खोपड़ीनुमा प्राणियों को यान से बाहर अंतरिक्ष में फेंक दिया। अब मोटू-पतलू, चेलाराम, डाक्टर झटका और घसीटाराम उस अंतरिक्षयान के मालिक थे और चेलाराम उस यान का चालक था।

चेलाराम अंतरिक्षयान का कन्ट्रोल तो कुशलता से सम्भाल सकता था. पर उसे पता नहीं था कि हजारों लाखों मील का सफर तै करता हुआ उनका यान कहां जा रहा है। यान में उनके लिये पर्याप्त भोजन की व्यवस्था थी और उसके यंत्रों की कभी समाप्त न होने वाली ऊर्जा थी। अंतरिक्ष के अथाह अंधेरों में पचास साठ लाख मील से भी अधिक सफर करने के बाद अंत में उन्हें किसी ग्रह की धरती दिखाई दी थी और चेला राम ने अपना यान सावधानी से वहाँ उतार लिया था।

उस ग्रह पर कोई विचित्र प्राणी आबाद थे. और उन्होंने अपने ग्रह पर उतरी टीम को पकड़ लिया था, तभी वहां तेज़ गड़गड़ाहट हुई थी और अन्तरिक्ष से किसी दूसरे उपग्रह का यान आता देखकर उन प्राणियों ने मोटू-पतलू ब्रादरी को छोड़ दिया था, और उन्हें यह समझने में ज़रा भी देर नहीं लगी कि इस उपग्रह और दूसरे उपग्रह से आये प्राणियों में घमासान युद्ध होने वाला है।

अन्तरिक्ष से उतरने वाले यान में से कम्प्यूटर युक्त बड़े-बड़े मशीनी मानव निकले थे, और इस उपग्रह के टैंकों ने तुरंत ही उन पर गोला बारी शुरू कर दी थी। पर वे मशीनी मानवों का कुछ नहीं बिगाड़ सके थे। दूसरे उपग्रह के वैज्ञानिक सुक्षम तरंगों द्वारा इन मशीनी मानवों को कंट्रोल करके उन्हें आगे बढ़ने और अपनी आंख से निकलने वाली विनाशकारी किरणों ने उनके टैंकों को मोम के खिलौनों की तरह पिघलाने का आदेश दे रहे थे। इसके बाद देखिये, इस रहस्य मई चित्रकथा के दिल हिला देने वाले अगले दृश्य, आइये, हम आपको लिये चलते हैं. उस विचित्र उपग्रह पर।
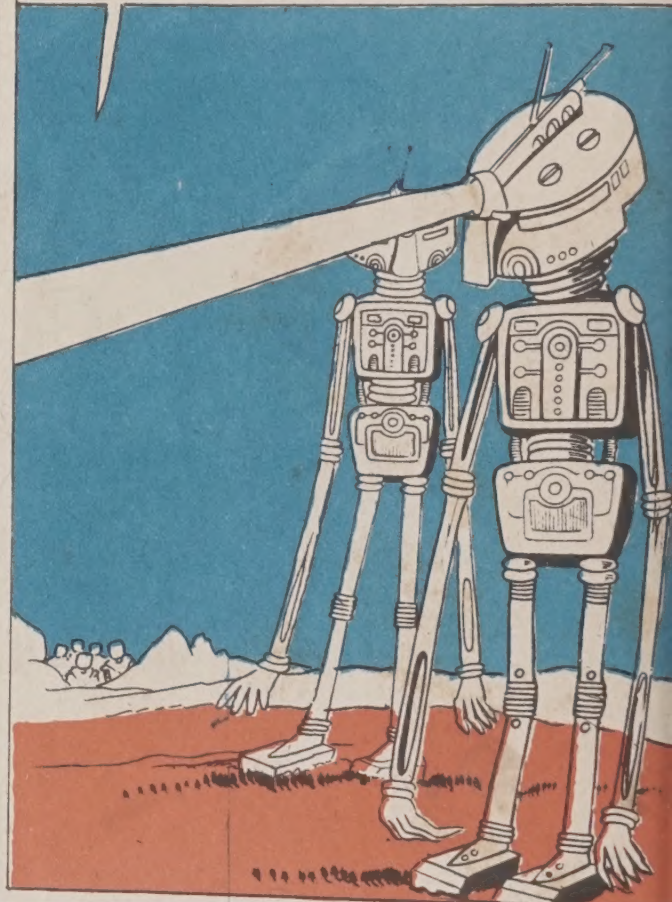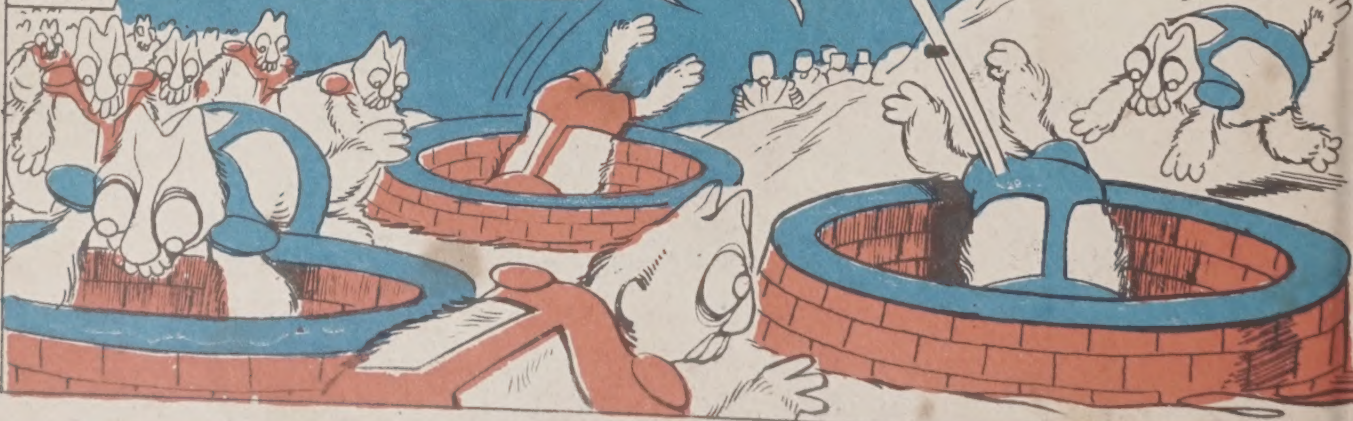
पर यह तो खुद मौत से डरे हुए हैं, लगता है इन्हें कूओं के तहखानों में छलांग लगा कर जान बचाने का मौका नहीं मिला है ।

नहीं इनके चेहरों पर तो उदासी के भाव हैं, यह तो रो रहे हैं, लगता है यह इस ख्याल से हमारे साथ आ लगे हैं कि इस मुसीबत के समय में हम इनकी सहायता करेंगे ।

इनके चेहरों पर तो "फ्रेंडली एक्सप्रेशंज" हैं ।
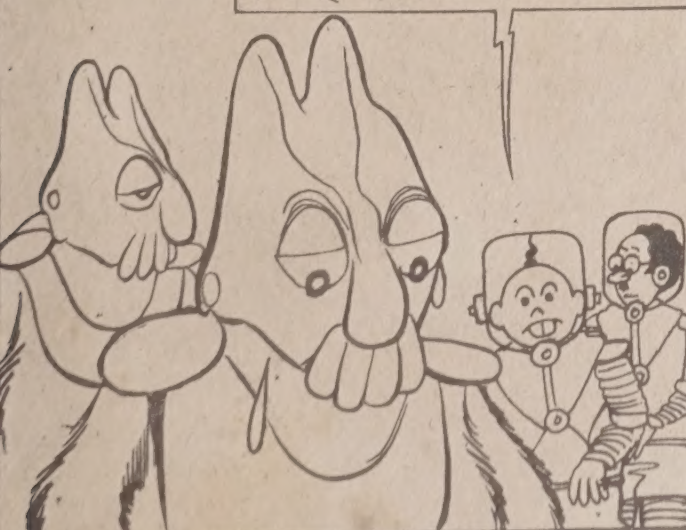
"फ्रेंडली एक्सप्रेशंज" हैं, तो तुम क्यों इन्हें तंग कर रहे हो । ढारस बंधा कर मैं इनका जी हलका कर दूंगा ।

भाग्य ने तुझे फिर एक सुनहेरी मौका दिया है घसीटा दी ग्रेट, इन्हें अपना फ्रेंड बना ले, फिर अगर उन मशीनी चर्खों से किसी प्रकार छुटकारा मिल गया तो अपनी अकलमन्दी से इन बन्दरों को घास चरा कर यहाँ अपना लंगर चला दूंगा ।
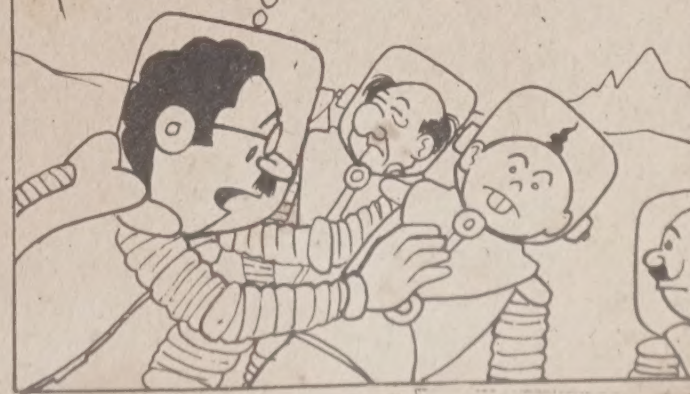
तुम्हारा नाम क्या है माई डीयर फ्रैंडस ?
मोरजिगाई मोर की साई।
मोरारजी भाई देसाई ?
वह कह रहा है "कसाई" और यह समझ रहा है "देसाई"।
जुग-जुग जी जन वन जीवान।
जुग-जुग जी जगजीवनराम, वाह वाह, इस उपग्रह पर भी मोरार जी देसाई और जगजीवन राम का चोली दामन का साथ है।
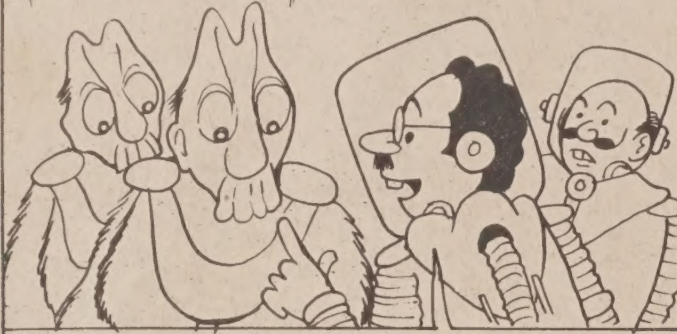
यह लोहे के आदमी मौत बन कर यहाँ आये हैं, क्या इनसे छुटकारा पाने के लिये हम तुम्हारी कोई सहायता कर सकते हैं।
क्या बकवास कर रहे हो ? यह मेरे फ्रैंडज हैं, पहले मैंने इनसे बात की है, मैं करूंगा इनकी सहायता।
हम सहायता कर रहे हैं,कुछ ले तो नहीं रहे हैं, इस बात में भी इस मूंछों वाले करेले की छाती फटी जा रही है।

तुम न लो, पर मैं तो लूंगा, मैं कोई इन्दिरा गाँधी नहीं हूँ जो बिना शर्त अपनी सहायता और अपना समर्थन दूं। क्यों माई डीयर जग्गू भाई एन्ड देसाई, अगर मैं यहां अविश्वास का प्रस्ताव पेश करके उन्हें चलता कर दूं और तुम्हें जितवा दूं तो तुम मुझे क्या दोगे ?
तुम पर विशेष अदालतों में मुकदमे चला देंगे!
सानम दिगम, हारम दिगम।
सोना दोगे। हीरा दोगे ! अरे वाह मोतियों वालों। जवाब नहीं है तुम्हारी दरिया दिली का।
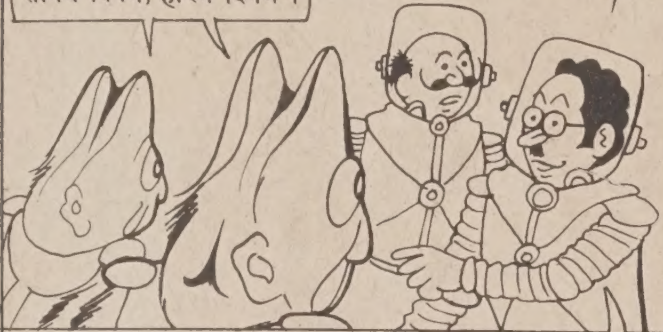
घसीटाराम ने तिकड़म लड़ा कर इनसे दोस्ती कर ली है। यह अपना प्यार जताने के लिए इसे 'किस' कर रहा है।
'किस' कर रहा है, या मुझे पेठे की मिठाई समझ कर खाने से पहले सूंघ रहा है।
?

वे लोहे के घंचक्कर इधर ही आ रहे हैं। यहां से खिसक लो।
यहां से निकल कर कहीं भाग नहीं सकते। वे अपनी आंख की तेज रोशनी से हमें भून देंगे।
इन पहाड़ियों की ओट में आगे बढ़ते चलो।
उन प्राणियों ने घसीटाराम की बात का पता नहीं क्या मतलब समझा था। वे घसीटाराम को बगल में दबाये मोटू-पतलू, डा० झटका और चेला राम के साथ-साथ चले जा रहे थे।
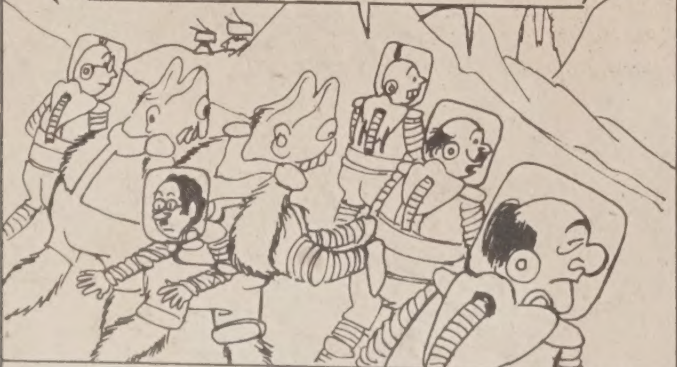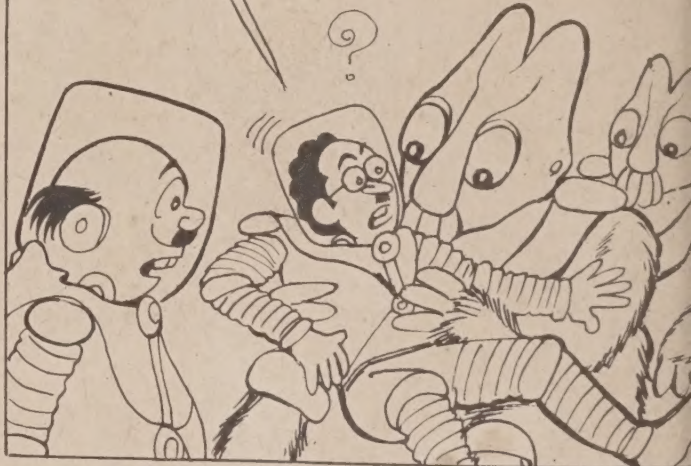
इतने सारे स्काईलैब यहां गिरे पड़े हैं। इनके बदले में अमरीका वालों से इतना ही सोना वसूल कर लूंगा। पर यह मुझे इतनी जोर से भींच रहा है कि टुथपेस्ट की ट्यूब की तरह दबा कर मेरे अन्दर का सारा बखेड़ा बाहर निकाल देगा।
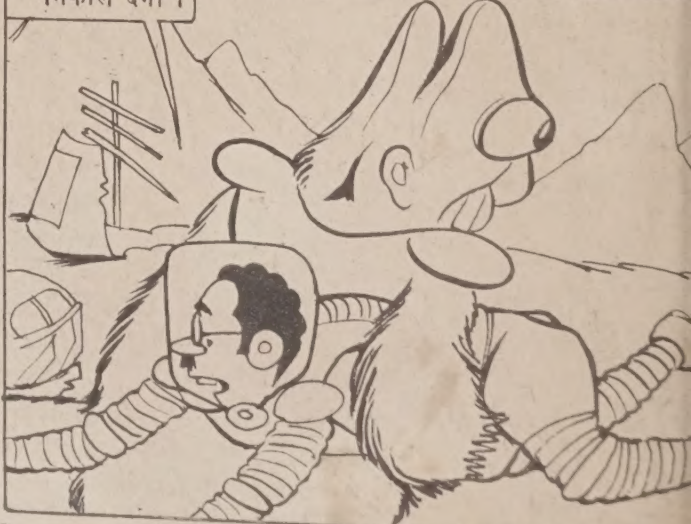
वह एक हीरा पड़ा है। वह सामने एक गुफा में बिजली सी चमक रही है। लगता है वहां सोने और यूरेनियम का भंडार है। अरे, तेरी तो किस्मत का इण्डियागेट खुल गया घसीटाराम। इनको बेबकूफ बना दूंगा और मोटू-पतलू को कहीं भी मरवा दूंगा। प्यार और लड़ाई में सब कुछ जाईज है। मुझे दौलत से प्यार है और बाकी सारी दुनिया से लड़ाई।
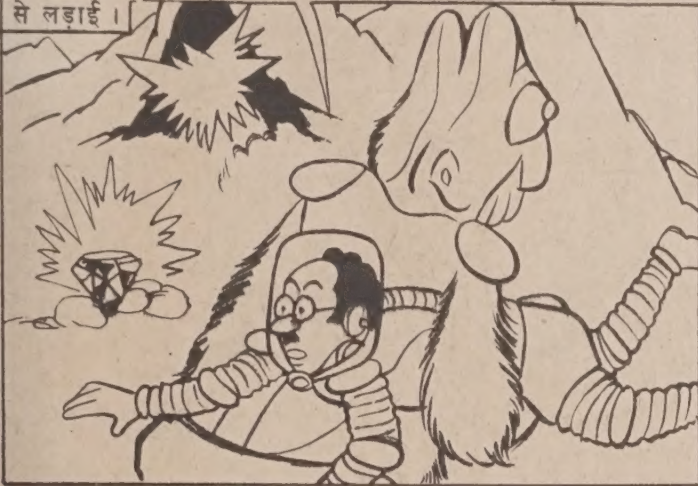
आगे चल कर घसीटाराम को एक और हीरा दिखाई दिया। वह इतना बड़ा था कि घसीटाराम खुशी से मचलकर बेकाबू हो गया और उस प्राणी की बगल से फिसलकर बाहर निकल पड़ा।
इतना बड़ा हीरा ! अरे, मैं इसे पाने की खुशी में मरने लगूं तो मुझे मरने मत देना।
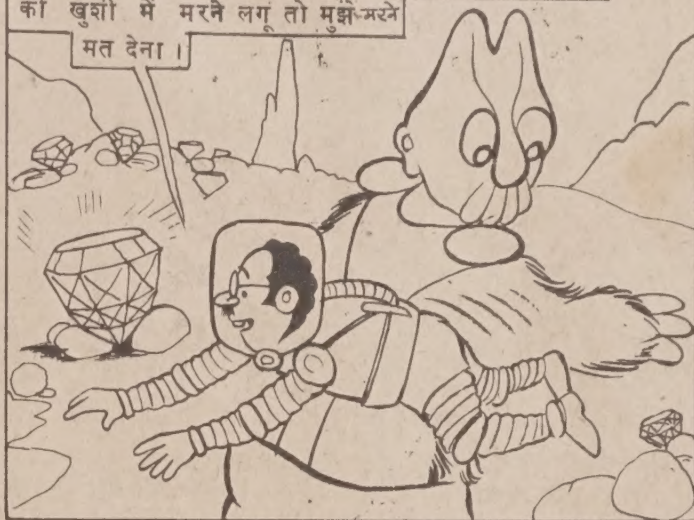
तुम सब जाओ यहां से और चेलाराम को छोड़कर सब किसी कूएं में डूब मरो।
यह पागल हो गया है खुशी के मारे।

इतना बड़ा हीरा है। शुक्र करो इससे चिपट कर यह पागल ही हुआ है। मरा नहीं।
मैं क्या मरूंगा। अब मैं तुम्हें मरवा दूंगा। पता है अब मेरे पास कितनी दौलत है। इतनी दौलत से मैं बड़े-बड़े गुंडे किराये पर लेकर अच्छों-अच्छों का सफाया करवा सकता हूँ। जान की खैर चाहते हो तो चेलाराम को छोड़ कर तुम सब यहां से दफा हो जाओ।

चेलाराम को क्यों छोड़ दें ?
यह मेरे अंतरिक्षयान का ड्राईवर है। मौका मिला तो मैं यहां की सारी दौलत लेकर धरती की ओर चल पड़ूंगा।
मैं तुम्हारे यान का ड्राईवर हूँ ?
और नहीं तो क्या ? तुझे ड्राईवर की वर्दी सिलवा दूंगा। और दो सौ रुपये महीना वेतन दूंगा।
वह यान तुम्हारा है ?
और नहीं तो क्या। मेरे पास बेशुमार दौलत है। और दौलत ही असल ताकत होती है। तुमने सुना नहीं, जिसकी लाठी उसकी भैंस।
हां सुना है। कहो तो उसे तुम्हारी कमर पर मार कर तुम्हें अभी भैंस बना दूं।

उपग्रह के प्राणियों ने घसीटाराम को फिर अपनी बगल में दबाया और आगे बढ़ गये।
अरे तुम कैसे फ्रेंडज हो मेरे ? मेरी जरा सी खुशी नहीं देखी गई तुम से। मैं कह रहा हूं, मुझे हीरों के खजाने में छोड़ दो। मैं वार्निंग दे रहा हूँ। मुझे गुस्सा आ गया तो मुझ से बुरा कोई न होगा।
तुम से बुरा तो दुनिया में कभी भी कोई नहीं हुआ।
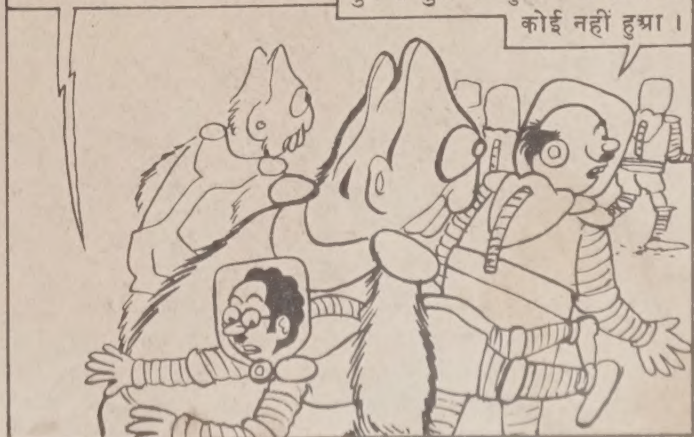
आगे चलते-चलते, वे एक जगह रुक गये।
अरे वह देखो ! सामने दो एरियल से क्या हैं? लगता है उन मशीनी आदमियों के एंटीना हैं। तुम सब यहीं ठहरो। मैं आगे बढ़ कर देखता हूँ।
अरे बाप रे ! बेड़ा गर्क हो गया। यह तो वही दोनों यंत्र चालक लोहे के आदमी हैं।
इनके एन्टीना बाहर की सिगनल ले रहे हैं। इनके सिगनल की लहरें अंतरिक्ष में उस उपग्रह की ओर जा रही हैं, लगता है यह इस उपग्रह से आये हैं। वहां के वैज्ञानिक अपने यंत्रों की सूक्ष्म तरंगों से वहीं बैठे-बैठे इन आदमियों में लगे आटोमैटिक कम्प्यूटरों को कंट्रोल कर रहे है।
बिप बिप.... बिप.... बिप
फिट.... फिट फिट.... फिट
इन मशीनी आदमियों का भट्टा बिठाने की मुझे एक तरकीब सूझी है। तुम्हारे पास कोई पेंचकस है ?
टंटू फंटू मशंटू कबड़ंटू,
क्या टंटू फंटू कर रहा है ?
अरे बन्दर की दुम, मैं पूछ रहा हूं, कोई पेंचकस मिल सकता है कहीं से ?
टंटू फंटू मशंटू कबड़ंटू।
फिर वही टंटू फंटू।
ठीक कह रहा है, टूटी फूटी मशीनों के उस कबाड़ खाने में होगा।
चेलाराम ने आव देखा न ताव। वह टूटी फूटी मशीनों के कबाड़खाने की ओर भाग लिया।
और वहां से एक बड़ा सा पेंचकस उठा लाया।
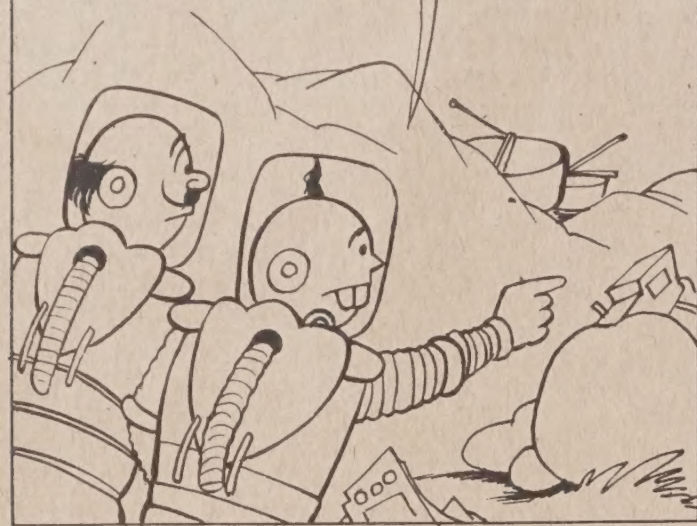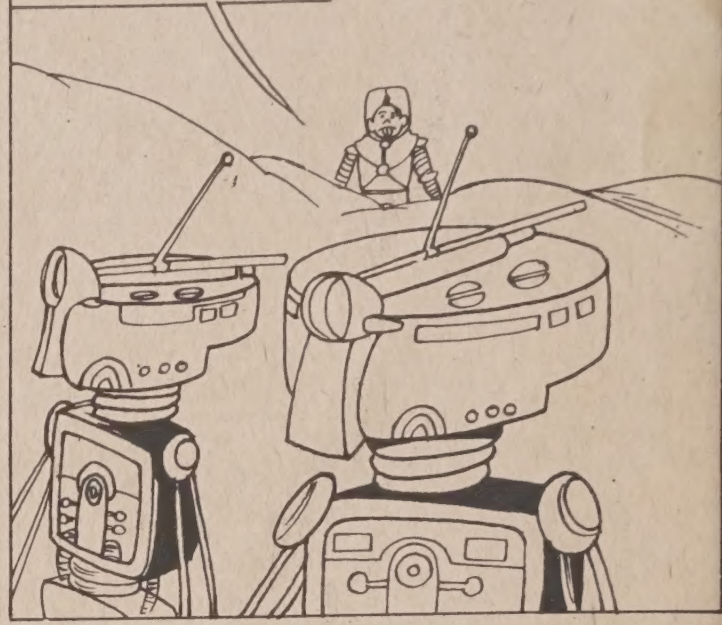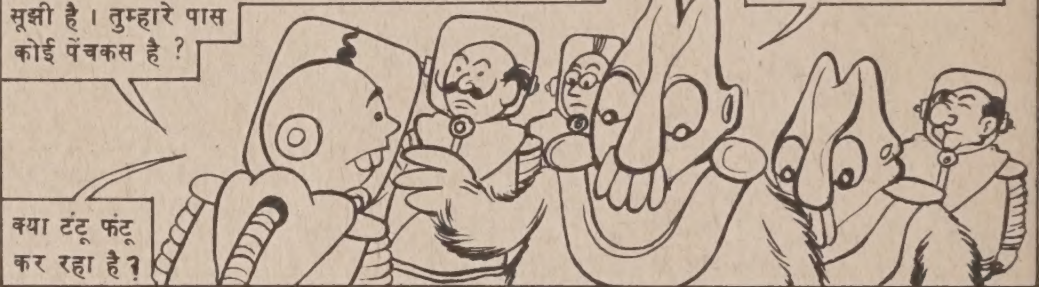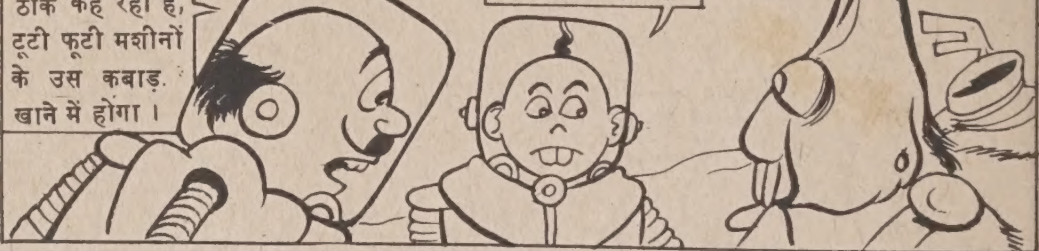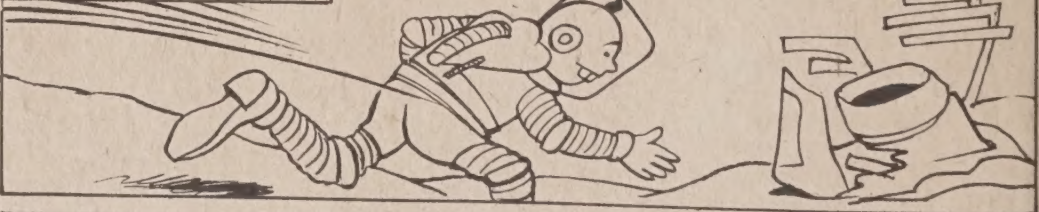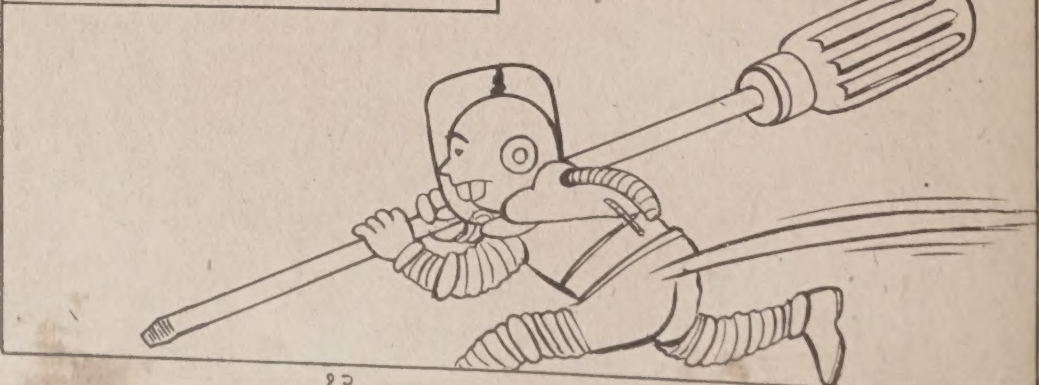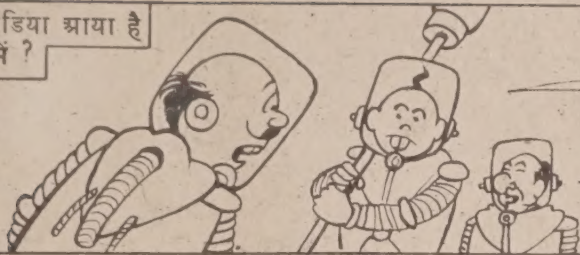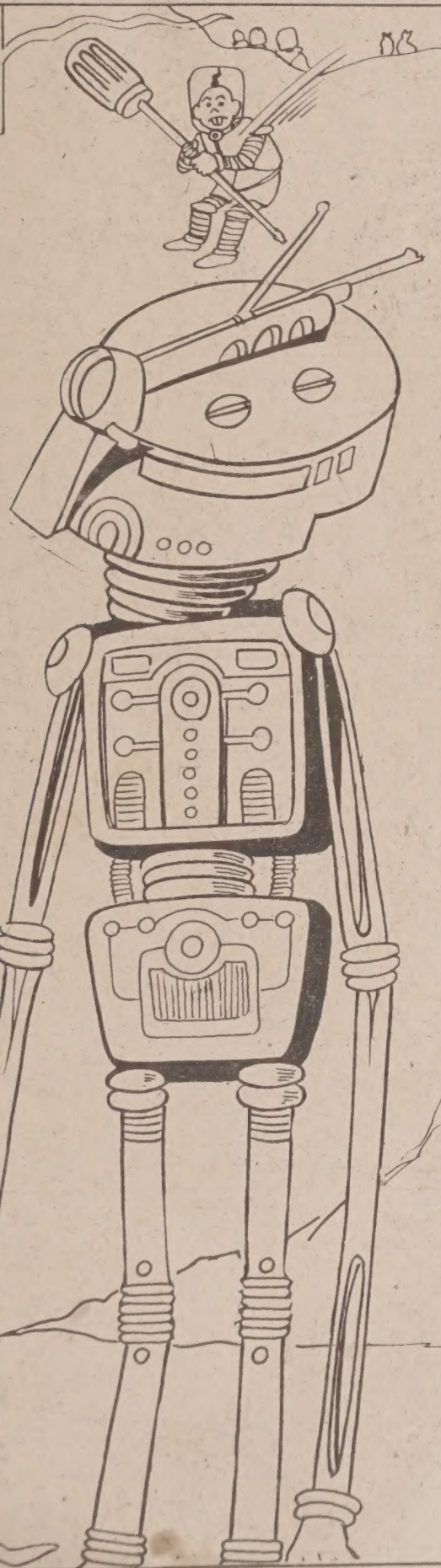
और एक के दिमाग के पेंच ढीले करके उसने दूसरे के सर पर छलाँग लगा दी। मशीनी आदमियों को कुछ होश नहीं था।

पर वहां से लाखों मील दूर बैठे इन आदमियों को कंट्रोल करने वाले वैज्ञानिकों ने अपने कैमरों से राडर के सक्रीन पर चेलाराम की कारसतानी देख ली थी। वे अपनी भाषा में पता नहीं क्या संदेश दे रहे थे। शायद वे अपने भेजे हुए मशीनी आदमियों को बताना चाहते थे कि अपने सर पर देखो। कोई चूहा पता नहीं क्या कर रहा है। पर अब तक बहुत देर हो चुकी थी। चेलाराम अपना काम कर गया था।
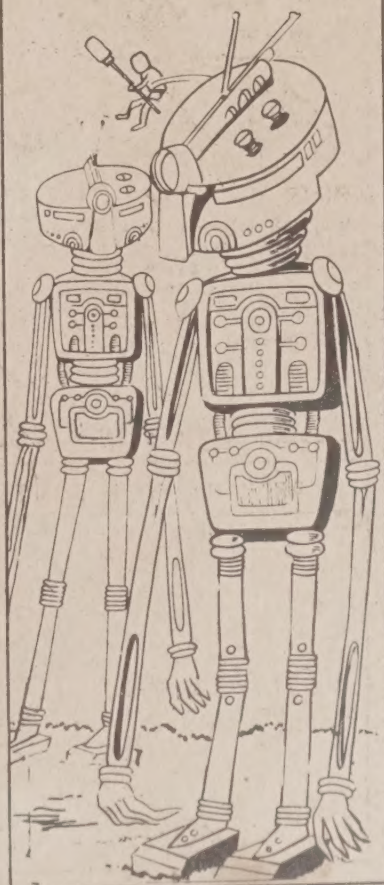
कर दिया कबाड़ा
किड़ किड़ किट किट ।
लाखों मील दूर उनके उपग्रह से पता नहीं उन्हें क्या संदेश
मिल रहे थे। पर अब उनका दिमाग इतना खराब हो चुक
था कि वे अपने बनाने वालों का कोई आदेश मानने क
तैयार न थे ।
किट
'शायद उन्हें कहा जा रहा था। एक दूसरे के सर के ढीले पेंच कस लो। पर अपने वैज्ञानिकों की कोई बात उनकी समझ में नहीं आ रही थी।
'गिरगिट···गिरगिट···खिट खिट खिट,
'फिर···फिर···पिटपिट···फिर फ़िर ।
'शायद उनसे कहा जा रहा था, अपने सर के ऊपर चट्टा
पर खड़े दुश्मनों को जला कर राख कर दो। पर ऐस
करने की बजाए उनमें से एक ने दूसरे के मुंह पर झाप
रसीद कर दिया था।
'कुड़कूं कुड़कूं···
पिट पिट पिट
'चिट···चिट···
चिट चिट···
और अपनी आंखों की तेज रोशनी से इस उपग्रह का सब कुछ जला कर खाक करने की बजाए उन्होंने आपस में लड़ना और एक दूसरे का कबाड़ा करना शुरू कर दिया था।
और यह लड़ाई इतना भयंकर रूप धारण कर गई थी
उन दोनों ने हाथ पांव तोड़कर एक दूसरे के इंजर
ढीले कर दिये थे।
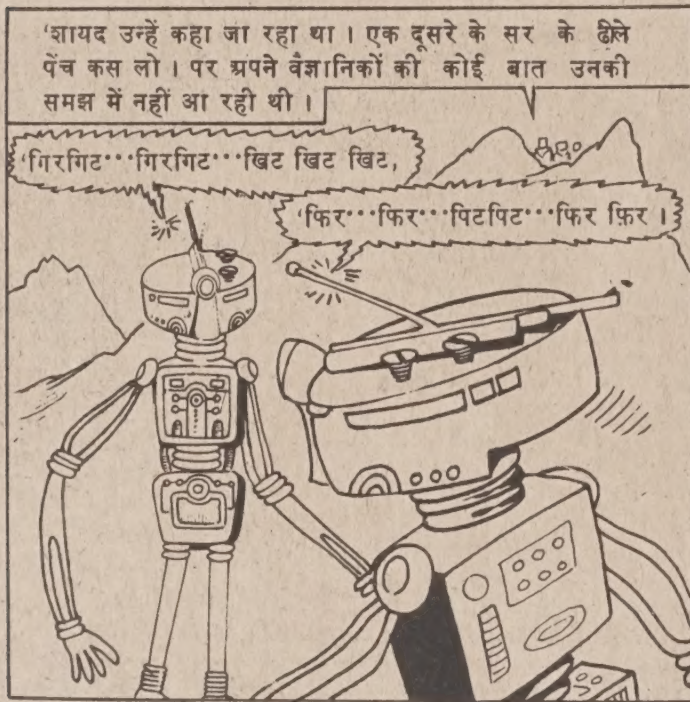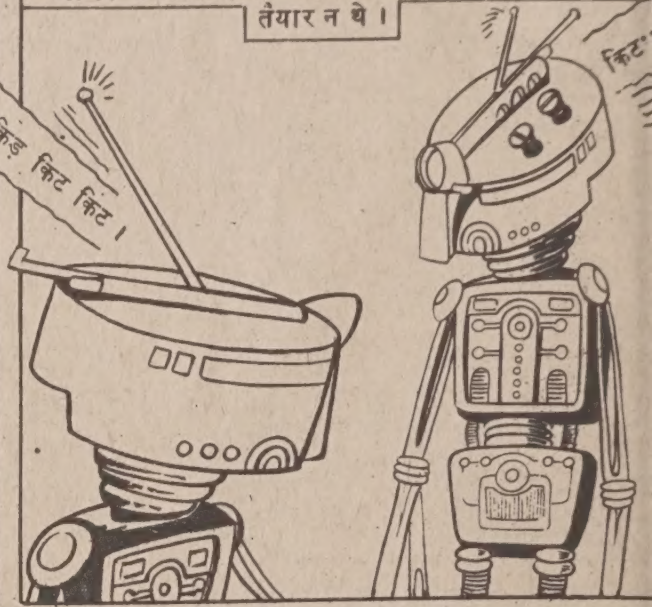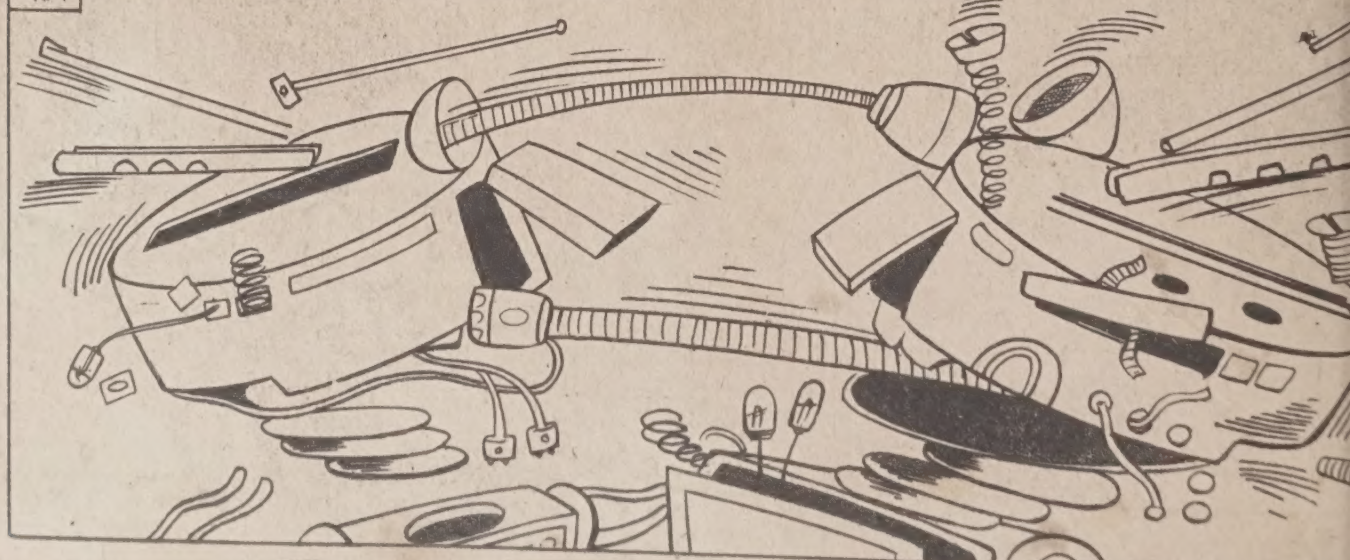
इस खतरनाक कहानी के अगले हंगामे आगामी अंक में देखिए।

'बिल्कुल चौकस रहेंगे…' धर्मपाल ने गम्भीरता से कहा, 'मेरे समधी ने वचन दिया है कि वह गौना कराके जरूर ले जायेंगे, लेकिन उनका बेटा गांव में नहीं रहेगा। वह शहर में अपने ताऊ के पास जाकर पढ़ेगा और बहू उनके पास रहेगी। जब उनका लड़का एम० ए० करके कोई अच्छी-सी नौकरी कर लेगा तभी वह बहू को उसके पास शहर में भेजेंगे।'

'लेकिन आखिर उन्हें इतनी जल्दी क्यों है फेरों और गौने की? आखिर तुम उन्हें जबान तो मुन्नी के जन्म ही पर दे चुके थे कि मुन्नी उनकी हो गई।'

'भाई साहब…आपको तो मालूम है कि 'दत्त' उनका इकलौता बेटा है…बड़ी मनौतियों और मुरादों के बाद वह शादी के बारह बरस बाद पैदा हुआ था…माता-पिता को बेटे के सिर पर सेहरा देखने का बहुत चाव है—उनकी पत्नी को कैंसर हो गया है…कैंसर के तीन ऑपरेशन अब तक हो चुके हैं…डॉक्टरों का कहना है कि अब उनके बदन में खून इतना कम रह गया है कि चौथा ऑपरेशन उनके प्राण भी ले सकता है…वैसे भी कैंसर का रोगी तो बस भगवान् की आस्था पर ही जिंदा रहता है…यह बात उनकी पत्नी को भी मालूम है और वह अपनी आंखें बंद होने से पहले अपने इकलौते और लाडले बेटे के सिर पर सेहरा देख लेना चाहती है।'

'तो फिर फेरे करा दो ना…उनका दिल भी रह जाएगा—गौना चार-पांच बरस बाद करा देना।'

'यह भी असम्भव है—लड़के की मां बहू को घर में चलते-फिरते देखना चाहती है।'

'हूं…।' यशपाल ने ठंडी सांस लेकर कहा, 'तो तुमने पक्का फैसला कर लिया है कि तुम मुन्नी के फेरे भी कराओगे और गौना भी!'

'आप जानते हैं भाई साहब, हम सूर्यवंशी खानदान के ठाकुर हैं—जो जबान एक बार दे देते हैं उससे टलते नहीं…चाहे गर्दन ही क्यों न कट जाए…वैसे भी लड़की इन्सान की इज्जत की इमारत की नींव में लगी सबसे कमजोर ईंट होती है—जरा-सी ऊंच-नीच से सारी इमारत ही आ गिरती है…और इस समाज में आए दिन घटनाओं को सुनकर ऐसे लगने लगा है जैसे आज के मर्द पर कामुकता और वासना का भूत सवार हो गया है…भगवान जाने इस वासना की बढ़ती हुई बाढ़ का अन्त क्या होगा? जैसे यूरोप में लोग अंधे होकर मां-बेटी और बहन तक का अन्तर भूलते जा रहे हैं—भगवान न करे वही दशा इस देश की भी हो। क्या आपने नहीं सुना पिछले दो महीनों में आस-पास के गांवों में लड़कियों को भगा ले जाने की और उनकी इज्जत लूटने की लगभग पन्द्रह घटनायें हो चुकी हैं…लखनपुर की ही घटना है, वहां के सरपंच की बेटी को तालाब के किनारे से उठाकर लोग ले गए थे…दो बरस बाद गांव का ही कोई भूला-भटका जवान शहर के चकले में चला गया और उसने सरपंच की लड़की को पहचान लिया। लड़की ने रो-रोकर सारी [illegible] सुनाई। सरपंच ने पुलिस का साथ लेकर छापा मारा…लड़की मिल गई। अपहरण करने वाले पकड़े गए। सरपंच लड़की को गाँव वापस ले आया…बन्दूक में दो गोलियां भर लीं…एक लड़की को मार दी और एक अपने मार ली।'

धर्मपाल ने एक झुरझुरी-सी ली और निर्णायक स्वर में बोले—

'नहीं-नहीं भाई साहब, मैं इस मामले में किसी की भी दलील नहीं सुनूंगा। मेरा तो दिन-रात का चैन चल गया है— इसके अलावा मैं अपने दोस्त को वचन भी दे चुका हूं…वहां पर शादी की तैयारी भी शुरू हो गई होगी…मैंने पुरोहित जी को मुहूर्त निकलवाने के लिए लिख दिया है। वह आज ही शाम को आ जायेंगे और मैं लड़के वालों के घर सन्देशा भिजवा दूंगा।'

धर्मपाल का स्वर ही कुछ ऐसा था कि यशपाल और रामदेई कुछ न बोल सके और उसे यूं देखते रह गए मानो गूंगे हो गए हों। धर्मपाल ने उठते हुये कहा—

'अच्छा भाई साहब, मैं जरा चौपाल तक जा रहा हूं।'

धर्मपाल के चले जाने के बाद य[illegible]पाल और रामदेई बड़ी देर तक [illegible] रहे…फिर यशपाल ने ही मौन तो[illegible] ठंडी सांस लेकर बोले—

'धर्मपाल तो अपनी जगह से [illegible]मस होने को भी तैयार नहीं लगते।'

'फिर…।' रामदेई ने भर्राई हुई [illegible] में कहा, 'फिर क्या होगा भैया? मेरी [illegible] की अभी उम्र ही क्या है? दस बर[illegible] पूरे नहीं हुये हैं। क्या वह इतनी-सी [illegible] में ही मुझ से जुदा होकर चली जाये[illegible] [illegible]री तो और कोई औल[illegible] भी नहीं है [illegible]खकर मैं अपना कलेजा ठंडा कर लूंगी[illegible]

बोलते-बोलते रामदेई साड़ी के [illegible] से मुँह ढककर रोने लगी। यशपाल ने [illegible] सांस लेकर कहा—

'क्या करूं बहन…मैंने तो उन्हें [illegible] समझा लिया…लेकिन इन घटनाओं [illegible] उनके दिमाग पर बहुत बुरा प्रभाव [illegible] है…वह यह नहीं समझते कि बाल-वि[illegible] की वास्तविकता को अब लोग समझ [illegible] हैं…यह कितना हानिकारक और कष्टदा[illegible] रिवाज है—इतनी छोटी बच्ची को [illegible] क्या ज्ञान कि ससुराल क्या होती है…[illegible] माता-पिता के घर को छोड़कर भी [illegible] जाना पड़ता है…यह आयु तो ऐसी है [illegible] बच्ची अपने माता-पिता की छाया में [illegible] और परवान चढ़े। यह ठीक है कि एक [illegible] एक दिन तो बेटी को पराये घर जाना [illegible] पड़ता है लेकिन जवान होने के बाद [illegible] लड़की उस सत्य को स्वीकार कर लेती [illegible] कि जन्म देने वालों से एक-न-एक दिन [illegible] सम्बन्ध तोड़ना ही पड़ता है…भला इत[illegible] छोटी-सी बच्ची इस बात को क्या समझे[illegible] क्या वह अपने माता-पिता, अपने घर [illegible]

चारदीवारी और अपनी सखी-सहेलियों के लिए तरसेगी नहीं ?'

रामदेई की सिसकियां निकलने लगीं। यशपाल ने थोड़ी देर ठहर कर पूछा—

'और हां—मुन्नी है कहां ?'

'पाठशाला गई है।' रामदेई ने भर्राई हुई आवाज में उत्तर दिया।

मुन्नी पाठशाला में दूसरे बहुत सारे लड़के-लड़कियों के साथ फर्श पर बिछे हुई टाट पर बैठी हुई थी···उसके सामने पुस्तकों का बस्ता था और पास ही एक तख्ती तथा कलम दवात रखे हुये थे···उसकी बेचैन दृष्टि बार-बार द्वार की ओर उठती और फिर वह सामने देखने लगती जहां मास्टरजी पुस्तक बोल-बोलकर श्रुत लेख लिखवा रहे थे···अभी तक मास्टरजी की दृष्टि अविनाश की सीट पर नहीं गई थी जो खाली पड़ी हुई थी। थोड़ी देर पहले ही जब मास्टरजी श्यामपट पर कुछ लिख रहे थे अविनाश चुपके-से झुककर कक्षा से बाहर निकल गया था···मुन्नी जल्दी-जल्दी अविनाश की तख्ती पर भी लिखती जा रही थी···वह पहले मास्टरजी के बोलने पर अपनी तख्ती पर लिखती और फिर अविनाश की तख्ती पर लिखकर जल्दी से हाथ बढ़ाकर उसकी तख्ती-बस्ते पर रख देती।'

अचानक मास्टरजी ने मुन्नी को झुकते हुए देख लिया और वह पुस्तक एक ओर रखकर ऐनक में से घूरते हुये बोले—

'ओ मुन्नी की बच्ची।'

'ज···ज···जी···मास्टरजी···?' मुन्नी उछल पड़ी।

'यह तू इधर-उधर क्या देख रही है ? क्या नकल करके लिख रही है ?'

'न···न···नहीं मास्टरजी···मेरा कलम गिर पड़ा था।'

'अच्छा···चल लिख' मास्टरजी ने कहा, 'जब भगवान् कृष्ण ने घर से चुपके-से निकलकर माखन चुराया तो···।'

मुन्नी ने जल्दी-से पहले अविनाश की तख्ती उठाई···उसे गुस्सा आ रहा था कि निशु का बच्चा अब तक नहीं आया···अगर मास्टरजी को पता चल गया तो मुर्गा बना देंगे उसे···और जल्दी और घबराहट में उसकी तख्ती पर बोले हुए श्रुत लेख के स्थान पर लिख गई, 'यह निशु का बच्चा अब तक नहीं आया···अगर मास्टरजी को पता चल गया तो मुर्गा बना देंगे।'

फिर जल्दी-से वह अपनी तख्ती पर लिखने लगी। दूसरे लड़के और लड़कियां चुपचाप श्रुत लेख लिख रहे थे। एक लड़के ने कनखियों से मुन्नी को देखा और उसका घुटना हिलाकर धीरे-से बोला—

'क्यों री···यह क्या कर रही है ?'

'तुझ से मतलब ?' मुन्नी ने आंखें निकालकर कहा।

'अच्छा समझ गया···निशु तेरे लिए आम की केरियां लेने गया होगा।'

'और तेरे लिए लेने जाएगा ?'

'एक केरी मुझे भी देगी ना ?'

'ठींगा दूंगी···' मुन्नी ने अंगूठा दिखाकर कहा।

'अच्छा !' तो कह दूं मास्टरजी से ?'

'कहकर तो देख···अविनाश से पिटवाऊंगी।'

इतने में मास्टरजी ने मुन्नी को घूरकर ऊंची आवाज में कहा—

'ऐ मुन्नी की बच्ची···।'

'ज···ज···जी मास्टरजी !' मुन्नी हड़बड़ाकर बोली।

'यह तू क्या खुसर-फुसर कर रही है ?'

मुन्नी ने बराबर बैठे लड़के की ओर देखा, जो जल्दी-से झुककर लिखने लगा था, और बोली—

'मास्टरजी···यह सिधु का बच्चा कह रहा है मुझे नकल करा, नहीं तो बाहर निकलकर मारूंगा।'

'क्यों बे सिधु के बच्चे···?' मास्टरजी ने डपटकर कहा।

'अरे···म···म···मैंने कब कहा था ?' सिधु बोखलाकर बोला।

'मैं जानता हूं तू पढ़ाई-लिखाई में कितना तेज है—चल इधर आ।'

सिधु डरा-सहमा हुआ उठ गया और उसे श्यामपट के पास जाकर मुर्गा बनना पड़ा। मुन्नी मुंह दबाकर हंसने लगी। फिर उसने अविनाश की तख्ती की ओर हाथ बढ़ाया तो उसका हाथ किसी के हाथ से टकरा गया। मुन्नी उछल पड़ी। उसने देखा तो अविनाश अपनी जगह पर बैठा हुआ था। मुन्नी की आंखें खुशी से चमक उठीं और उसने काना-फूसी की।

'आ गया तू···?' मैं तो डर रही थी कि कहीं मास्टरजी को पता न चल जाए।'

'मेरी तख्ती पर लिख दिया था ?'

'हाँ, लिख दिया था।'

'बस, आगे मैं लिख लूंगा···तू अपनी केरियां संभाल।'

मुन्नी ने जल्दी-जल्दी केरियां बस्ते में रख लीं और श्रुत-लेख लिखने लगी। थोड़ी देर बाद मास्टरजी ने कहा—

'लाओ···अब अपनी-अपनी तख्तियां लाकर रख दो यहां।'

लड़के-लड़कियां अपनी-अपनी तख्तियां मेज पर रखने लगे और मास्टरजी एक-एक तख्ती उठाकर पढ़ने लगे। अविनाश ने भी अपनी तख्ती मेज पर लाकर रख दी। मास्टरजी एक तख्ती पर झुके हुए थे। अविनाश ने इधर-उधर देखा जो लड़के उसे देख रहे थे उन्हें आँखें दिखाई जेब से कुछ निकाला और फुर्ती से मास्टरजी की टोपी के नीचे रखकर टोपी को ऊपर से मोड़ दिया···फिर चुपचाप अपनी जगह पर आन बैठा। सिधु बेचारा अभी तक मुर्गा बना हुआ था। मुन्नी ने धीरे-से अविनाश को बताया कि सिधु ने मास्टरजी से उनकी शिकायत करने की धमकी दी थी। अविनाश खूंख्वार नजरों से सिधु की ओर देखकर बड़बड़ाया—

'बाहर निकलने दे इस को···समझ लूंगा आज !'

एकाएक मास्टरजी मेज पर डंडी मारकर जोर से पुकारे—

'अविनाश···।'

'जी···मास्टरजी···' अविनाश बुरी तरह उछल पड़ा···उसका दिल धड़क उठा था।

'इधर आओ···।' मास्टरजी गुर्राये।

अविनाश जल्दी से लपक कर मेज के पास पहुंच गया। मास्टरजी ने अविनाश की तख्ती पर एक जगह रेखा खींचकर तख्ती उसकी ओर बढ़ाकर कहा—

'जरा यह पढ़ो···क्या लिखा है ?'

अविनाश ने जल्दी से तख्ती उठाई और ऊंचे स्वर में पढ़ने लगा—

'यह निशु का बच्चा अभी तक नहीं आया···मास्टर जी को पता चल गया तो मुर्गा बना देंगे।'

कक्षा में एक ठहाका हुआ और मुन्नी ने घबरा कर अपने मुंह पर हाथ रख लिया। अविनाश ने खूंख्वार नजरों से मुन्नी को घूरकर देखा और मुन्नी का कालेजा कांप गया, अविनाश के डर से कि अविनाश अब उससे रूठ जाएगा।

शेष आगामी अंक में

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें ।

मदन किशोर होतवानी—बैरन बाजार, (रायपुर) : भविष्य में अंधकार ही अंधकार दिखाई दे तो क्या करना चाहिये ?

उ० : दीवाना पढ़ते रहना चाहिये। यह एवररेडी का सैल अन्तरआत्मा में प्रकाश कर के अंधकार मिटाता है।

राम अवतार सिंह, अलवर : मेरे विचार में तो श्री मोरारजी देसाई की आर्थिक नीति बहुत सफल थी, आपका क्या विचार है ?

उ० : बहुत सफल थी, उन्होंने पैसे बचाने का एक सरल उपाय बताया। वह जो पीते हैं, उस पर 'एक्साईज ड्यूटी' नहीं लगती।

अमृता प्रधान, भगतपुर : दौलत वाले दौलत से दुनियाँ की हर चीज खरीद सकते हैं, फिर गरीबों के लिये क्या रह जाता है ?

उ० : दिल की दौलत जिसके लिये बादशाह आज तक तख्त और ताज छोड़ते रहे हैं।

जितेन्द्र कुमार जैन, "जागृति", दमोह : चाचा जी, जब भगवान हर दिल की बात जानते हैं, तो मंदिरों में स्पीकर क्यों लगाये जाते हैं ?

उ० : उसके दिल की बात पूछने के लिये।

अरुण कुमार शर्मा, लखनऊ : अंकल जी, मुकद्दर पर आपका कितना विश्वास है ?

उ० : पूरा विश्वास है, कभी कोई मुकद्दर बन जाता है, कभी कोई सिकंदर, बक्त पर बनाऊ मंत्री बन जाता है, और कभी बदकिस्मत का अपना घर उजड़ जाता है।

विनोद कुमार बर्णवाल, धनबाद : चाचा जी, अपनी शादी के समय की कोई खास बात बताईये !

उ० : उस समय हमारी श्रीमती जी रो रही थीं, इसके बाद आज तक हमारी आंखों से आंसू खुश्क नहीं हुये हैं।

लखमीचन्द्र माधवानी, मेहर : डीयर अंकल, यदि मैं दीवाना में प्रकाशन के लिये नये-नये चुटकुले और कार्टून भेजूं तो क्या आप स्वीकार करेंगे ?

उ० : मनोरंजक हुये तो अवश्य स्वीकार करेंगे, कार्टून का साईज रखिये साढ़े तीन इंच चौड़ा और साढ़े चार इंच ऊंचा।

रोचाराम, सेवक राम, मोतीराम ट्हलवाणी, परतपाड़ा : आपके पास हर सप्ताह कितने पत्र आते हैं ?

उ० : अब हालत यह होने लगी है, कि अपने कमरे में या तो हम रह सकते हैं, या आपके पत्र।

नरेन्द्र कुमार गावा, हांसी : चाचा जी, फूलों से कोमल तथा कांटो से नुकीली चीज कौन सी है ?

उ० : राजनारायण की दाढ़ी के बाल, इनकी कोमलता आज गद्दियों पर बैठे मंत्रियों से पूछिये और यह नुकीले कितने हैं, यह बात मोरार जी देसाई कम से कम इस जीवन में तो नहीं भूल सकेंगे।

प्रीतमसिंह चौहान, जयपुर : जार्ज फर्नांडीस आजकल कौन से महत्वपूर्ण कार्य में लगे हुये हैं ?

उ० : रेल कर्मचारियों का भट्टा बिठाने और शायद इस बार कम से कम दो सौ रेलगाड़ियां पटरी से गिराने की योजनायें बना रहे हैं, ताकि इस बार और भी बड़े मंत्री बन सकें।

सुरेन्द्र खुराना, "पप्पू", मोगा : एक पाप का प्रायश्चित कितनी देर करना पड़ता है।

उ० : सच्चे दिल से अपनी गलती स्वीकार कर ली जाये तो पल भर का प्रायश्चित काफी होता है।

सुरेश कुमार, नामदेव—पिपरिया : चाचा जी, यह 'आपस की बातें' हैं, तो आप इनका ढिंढोरा क्यों पीटते हैं ?

उ० : आदत से मजबूर हैं, और सुरेश कुमार जी, हमारे भूतपूर्व प्रधान मंत्री ने गोपनीय की कसम खाई और भगवान को हाजिर नाजिर जान कर शपथ ली कि वे सरकारी राज किसी को नहीं बतायेंगे, और उन्होंने चौधरी चरण सिंह और श्री बहुगुणा के अपने नाम लिखे पत्र प्रेस में प्रकाशित करवा दिये और उनका ढिंढोरा पीट दिया। उनकी 'आपस की बातें' आपस की न रहीं, फिर हम किस खेत की मूली हैं।

मोहन लाल शर्मा, करनाल : सबसे बड़ा पाप कौन सा है ?

उ० : जो छुपा न रह सके।

सतीन्द्र जैन, सुवर्णी, जबेरा : अंकल जी, क्या आपने कभी भूख हड़ताल की है ?

उ० : हमने तो कई बार भूख हड़ताल की है। पर "भूख" ने कभी "हड़ताल" नहीं की और हमें खाना खाने पर मजबूर कर दिया।

चन्द्रभान, 'अनाड़ी'—जबलपुर : बातूनी होने के क्या लाभ है।

उ० : इधर-उधर का कूड़ा करकट जमा करके आप एक नई राजनीतिक पार्टी बना कर उसका नाम रख सकते हैं, जनता पार्टी (डी०) अर्थात्, जनता पार्टी डिफैक्शन।

अवतार सिंह, चाड़क, सरोर, जम्मू : आप ने मोटू-पतलू की कहानी के रंग क्यों उड़ा दिए हैं ? बिना रंगों का इसका मजा बिलकुल फीका पड़ जाता है।

उ० : कोई छपाई की मशीन नाराज हो जाए तब यह नौबत आती है। हम इसे अधिक से अधिक रंगीन बनाने की कोशिश में लगे हुए हैं।

अशोक, 'प्रेमी'—बोराबाजार : मैंने दो कविताएं भेजी थीं। अब तक प्रकाशित नहीं हुईं। क्या उन्हें गरीब चन्द कुतर कर खा गया है ?

उ० : जी नहीं, अभी वह उन पर अपनी दुम रगड़ कर देख रहा है कि वे किस योग्य हैं।

ओमप्रकाश अग्र.—तिनसुकिया : डीयर अंकल क्या समय के अनुसार मनुष्य को बदलना चाहिए ?

उ० : जरूरत पड़े तो समय को अपने अनुसार बदल देना चाहिए।

अनिल दुर्गा, आनन्दपुरी,—रायपुर : क्या आप दो दिनों के लिए हमारे नेता बन सकते हैं ?

उ० : अवश्य, पर दो दिन तो बहुत होते हैं अनिल जी, जैसे हालात आजकल चल रहे हैं, लोग दो घंटे के लिए किसी को नेता बनाया करेंगे और तीसरे घंटे उसे उठाकर मोरी में फेंक देंगे।

एस० एम० आलमगीर,-हजारीबाग : चाचा जी, मनुष्य को जीवन में सबसे अधिक किस चीज की आवश्यकता होती है ?

उ : जीवन की।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

फैण्टम - जंगल शहर

तुम भाग्यशाली हो कि तुम्हें
इन्होंने जान से नहीं मारा !
मगर, शायद अगले लोग
इतने भाग्यशाली···

तुम ठीक कहते
हो, मैं पुलिस के
पास जाऊंगा।

ओ बदमाश…
…हिल नहीं रहे, क्या जिन्दा हैं ?
हां…सो रहे हैं ।
वाह…तुमने बहुत जोर से मारा। यह इनके चेहरे पर क्या है, खोपड़ी के निशान जैसा ?

लगता है इनके गिरोह का गुप्त चिन्ह है ।
तुम बुरे आदमी नहीं लगते। पर यह नकाब क्यों पहना है ?
और ऐसी अजीब पोशाक !

फर्क नहीं पड़ता मैं कौन हूं! तुम यहां पर रुको, मैं पुलिस वाले को ढूंढ़ता हूं।
और इनकी फिक्र मत करना,ये दोनों काफी देर तक चित्त पड़े रहेंगे ।

और याद रखना तुमने वायदा किया था कि तुम इनके खिलाफ गवाही दोगे ।
हवलदार…आपकी वहां जरूरत है… कुछ लोग…
…बदमाशों के साथ मुश्किल में हैं ।
क्रमशः

प्र० : सम्मोहन या हिपनोटिज्म की खोज तथा आरम्भ कब और कहां हुआ ?

उ० : उच्च पद सम्भाले हुए कोई भी व्यक्ति जैसे अध्यापक पुलिस अफसर या सरकारी अफसर अपने आदेश मानने के लिये किसी को भी बाध्य कर सकते हैं परन्तु इसके विपरीत ये ही लोग किसी को भी अपनी इच्छा अनुसार सोचने तथा अनुभव करने पर बाध्य नहीं कर सकते।

सम्मोहन की सबसे अद्भुत बात है कि इससे प्रभावित व्यक्ति सम्मोहित करने वाले की इच्छा के अनुसार ही सोचता तथा कार्य करता है उदाहरण के लिये सम्मोहित व्यक्ति सम्मोहन के प्रभाव में सर्दी से कंपकंपी आने जैसी क्रिया, गर्मी से पसीना आने की क्रिया या डर से रंग सफेद होना या शर्म से लाल होना तक करवाया जा सकता है। प्रभावित व्यक्ति प्रिय भोजन से घृणा तथा अप्रिय भोजन को बड़े भाव से खा सकता है। परन्तु इच्छा के विरुद्ध किसी भी व्यक्ति को सम्मोहित नहीं किया जा सकता तथा कोई भी अनैतिक या गैरकानूनी कार्य जो वो साधारण जीवन में न करता हो नहीं करवाया जा सकता।

दूसरे के व्यवहार को प्रभावित करने की लोगों की अद्भुत क्षमता कोई नई खोज नहीं है। वास्तव मे ये तंत्र जादूगरी या औषधि जितनी ही पुरानी है। सम्मोहन करने की क्षमता कुछ व्यक्तियों में आदिकाल से ही थी या यूं कहिये जंगली व्यक्तियों को भी इसकी जानकारी थी। इस आदिकाल में इस शक्ति को उपचार के रूप में ही जाना जाता था।

परन्तु अब सम्मोहन का वैज्ञानिक तौर पर भी अध्ययन किया गया है। सम्मोहन का ये वैज्ञानिक अध्ययन अट्ठारवीं शताब्दी के बाद के भाग से सम्बन्धित है। 'वियाना' के एक डा० फ्रान्ज मेसमर ने सबसे पहले सम्मोहन द्वारा दिमाग के रोग के उपचार के लिये इसका प्रयोग किया था। इसी कारण सम्मोहन को मेसमरेजम का नाम दिया गया लेकिन डा० मेस्मर भी सम्मोहन क्या है पूरी तरह जान नहीं पाये थे। वो समझते थे कि ये सम्मोहन एक 'पशु चुम्बकीय आकर्षण' है। उनके विचार से ये शक्ति सम्मोहित व्यक्ति में सम्मोहन करने वाले से संचारित होती है। इसी सिद्धांत के कारण डा० मेस्मर तथा उनके अनुयायी धोखेबाज समझे जाते थे। फिर लगभग सौ वर्ष बाद अंग्रेज डा० जेम्स ब्रेड ने इस विषय का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन किया उन्होंने हिपनोसिस तथा हिपनोटिज़म के शब्द ईजाद किये और फिर इस विषय का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन किया जाने लगा।

प्र० : इतिहास का सबसे बड़ा ज्वालामुखी कब और कहां फटा था ?

उ० : इस प्रकार के प्रश्न का उत्तर देते समय हमें सबसे पहले ये समझना आवश्यक है कि हम इतिहास में रिकार्ड की हुई ज्वालामुखी विस्फोट की घटना को ही उल्लेखित कर सकते हैं। इतिहास के पूर्व काल में या जब पृथ्वी की रचना हो रही थी तब न जाने कितने इस प्रकार के या इससे भी बड़े विस्फोट और भूकम्प आये होंगे।

परन्तु जहां तक रिकार्डों से विदित होता है, सन् १८८३ में इण्डोनेशिया

रिपब्लिक के 'कराकोटा' द्वीप पर संसार का सबसे बड़ा ज्वालामुखी फटा था। इस समय होने वाले विस्फोटों में सबसे बड़ा २७ अगस्त को हुआ था। आइये इस असाधारण विस्फोट के प्रभाव के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त करें।

सबसे पहले विस्फोट के कारण इस द्वीप का पूरा का पूरा उत्तरीय तथा निचला भाग टूट कर अलग हो गया। विस्फोट के पहले ये द्वीप १८ वर्ग मील का था तथा समुद्र से ३०० से १४०० फुट तक ऊँचा था। विस्फोट के बाद समुद्र के तले में एक छेद हो गया जो समुद्र की सतह से १०० फुट नीचे तक चला गया था, धूल, पत्थर तथा राख हवा में १७ मील की ऊँचाई तक उठ गये तथा जैसे ही ये मलवा फैलने लगा १५० मील दूर तक के स्थानों में दिन में अन्धेरा छा गया। इस विस्फोट की आवाज ३००० मील की दूरी तक सुनाई दी जो कि स्वयं में ही एक रिकार्ड है। सब से अधिक विनाश इस विस्फोटक के कारण समुद्र में उठी लहरों द्वारा हुआ। इनमें सबसे बड़ी लहर ५० फुट की ऊँचाई तक उठी तथा इसने अपनी लपेट में लेकर गाँव के गाँव बहा लिये तथा इससे मरने वालों की संख्या ३६०००, तक पहुँची थी। ये विनाशकारी लहरें दूर-दूर तक गईं। कहा जाता है कि ११०० मील की दूरी पर बनी इंगलिश चैनल तक ये लहरें पहुँच गई थीं।

ये ही ज्वालामुखी सन् १९२७ में दुबारा सक्रिय हो उठा था परन्तु भाग्यवश ये बिस्फोट पहले जैसा बड़ा तथा भयानक नहीं था।

प्र० : रक्त में आर० एच० फैक्टर क्या होता है ?

उ० : किसी भी कारणवश किसी व्यक्ति के शरीर से अधिक रक्त की हानि होने पर उसके शरीर में रक्त चढ़ा कर उसके जीवन की रक्षा की जा सकती है। दूसरे व्यक्ति के रक्त को रक्त नाड़ियां में डालकर नष्ट रक्त की पूर्ति की जाती है।

सबसे पहला रुधिर-आधान सन् १६७७ में रिकार्ड किया गया था जबकि एक मरते हुए बच्चों के शरीर में एक भेड़ का रुधिर आधान किया गया था। बच्चा भाग्य से बच गया, परन्तु आज हम जानते हैं कि निम्नवर्ग के जीवों का रक्त मनुष्य के रक्त से भिन्न होता है और इसे रुधिर-आधान के लिए सुरक्षित रूप से प्रयोग नहीं किया जा सकता।

सन् १९४० में पता चला कि रक्त को एक और ढंग के ग्रुपों में भी बांटा जा सकता है जो कि आर० एच० फैक्टर पर निर्भर है। ये खोज रिहस्स बन्दर के रक्त पर किये गये परीक्षणों द्वारा सम्भव हुई थी इसीलिए इसे आर० एच० फैक्टर के नाम से पुकारा जाता है। इस खोज से पता चला कि रक्त के विशेष मिश्रण करने पर रक्त के लाल अणु टूटकर अलग-अलग हो जाते हैं इसका कारण आर० एच० फैक्टर में अन्तर होता है।

इस विषय में मनुष्यों का रक्त आर० एच० पोजीटिव तथा आर० एच० नेगेटिव में बांटा गया है। जब किसी आर० एच० पोजीटिव ग्रुप के रक्तवाले का आर० एच० नेगेटिव का रक्त वाले को चढ़ाया जाता है तो रक्त पाने वाला, दूसरी बार ऐसा होने पर एक रक्त रोग से ग्रस्त हो जाता है।

आर० एच० पोजीटिव रक्त वाले पिता तथा आर० एच० नेगेटिव रक्त वाली माता होने पर विशेष परिस्थिति होने पर ही चालीस-पचास में केवल एक बच्चा ही ऐसे रक्त रोग से पीड़ित पैदा होता है।

पिलपिल-सिलबिल
रॉबिन हुड
भाग (II)
पिछले अंक में आपने पढ़ा कि रॉबिन हुड की कहानी सुन कर पिलपिल-सिलबिल स्वयं रॉबिन हुड बनने का निश्चय कर लेते हैं। ताकि अमीरों को लूट कर वे पैसे गरीबों में बांट सकें। झुमरी तलैया के जंगलों को वह अपना हैड क्वार्टर बनाते हैं। उससे आगे—

आज से हिन्दुस्तान के गरीबों की किस्मत हम एक नयी कलम से लिखने की कोशिश करेंगे। अमीरों के सिर पर मौत की काली छाया पड़ चुकी है। हमारे खंजर उनके खून के प्यासे हैं…अर्रर्र…अर्रर्र यह क्या नजारा…? ओ. के. रॉजर।
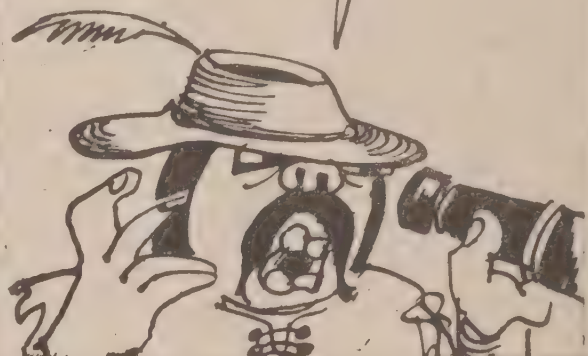
भाई जी, फौरन ओपरेशन जिब्राल्टर को लागू करने के लिये तैयार हो जाओ। दूर वाले मोड़ पर से एक कार आ रही है। कार को शोफर चला रहा है और पिछली सीट पर एक मोटा सेठ बैठा है। खिड़की पर उसने अपना मोटा सा बैग भी रखा है, जरूर उसमें माल भरा पड़ा होगा। हमारे जापानी टैलीस्कोप से नजारा ऐसे दिखाई देता है जैसे अपनी आंखों के सामने ही हो रिया हो। नीचे वाले मोड़ तक आते उसे पांच मिनट से ज्यादा नहीं लगेंगे, जल्दी करो।

जल्दी कर चूहे, इस पत्थर को धक्का लगाने में जोर लगा। हमने तुझे जो मक्खन और डबल रोटी खिला रखी है उसकी कीमत चुका। कार आने से पहले रास्ता ब्लाक करना है हमें।

शाबाश! म्हारे आई. एस. आई. मार्क वाले पत्थर को देख कर कार क्या ट्रक भी खड़ा रह जायेगा।
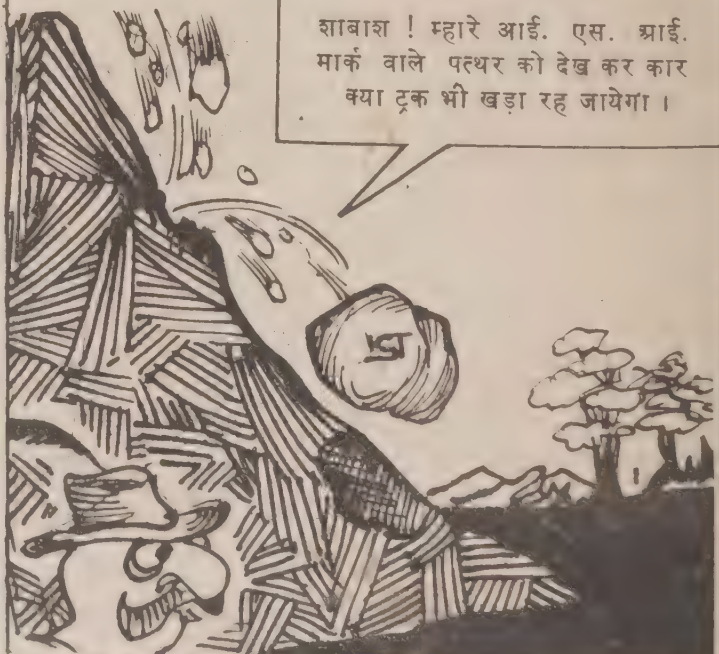
खबरदार अपनी जंगे से हिलने की कोशिश न करना। कार बैक करना मना है क्योंकि पीछे भी हमारे गैंग के आदमी खड़े हैं। आप लोगों को पता होना चाहिये कि आप पर भारत के रॉबिन हुड थ्री ईगल्ज का हमला हो चुका है।

दोनों हाथ सिर के ऊपर खड़े करके धीरे-धीरे कार से बाहर निकलो! अगर कोई हथियार है तो चुपचाप कार में ही रहने देना, चालाकी का मतलब है मौत। मेरी पिस्तौल गद्दारी की सजा देगी।

अरे, यह क्या हो गया ? कार धमाके के साथ उड़ गयी । पता नहीं वह दोनों मूंजी कर क्या रहे हैं ? कार को बम से उड़ाने की जरूरत क्या थी ? यह दोनों मेरा दिमाग खराब करके ही रहेंगे । हे राम कैसे पाजामों के साथ फंस गया ।

बेवकूफों तुमने यह क्या गजब कर डाला ? बनता काम बिगाड़ दिया । किस बेवकूफ ने तुमको कार पर बम फेंकने के लिये कहा था ?
ऐह!

हमने कौन-सा बम फेंक दिया ? हमने कोई बम नहीं फेंक्या, म्हारे पास बम था ही कहां ? गोल बेंगनों पर काला रंग करके तो हम नकली बम बना कर काम चलाने की सोच रहे थे । मेरे पास तो एक छुरा था, वह भी नकली, लकड़ी का । फल की जगह गोंद से सिगरेट की चिलचिली चिपका कर नकली छुरा बना रखा था और थम मुझे कह रिये हो बम चलाया । मेरे पास तो पटाखा भी नहीं था ।
ठीक है बॉस इसने बम नहीं चलाया ।

चलो बाद में सोचेंगे कि क्या हुआ ? पहले तो इस जगह से खिसक चलो । यहां जल्द ही पुलिस आ जाएगी । कहीं हम ही न धरे जायें ।
मुझे लगता है कि सेठ हमारे से पहले ही किसी षडयंत्र का शिकार हो चुका था । उसकी कार की डिकी में किसी ने टायम बम रख दिया होगा, जो ठीक यहां आकर फट गया, साथ ही म्हारी किस्मत फूट गयी ।

आइ आई योऽऽऽऽ मेरी रीढ़ की हड्डी तिड़क गयी है । मुझसे पहाड़ी पर नहीं चढ़ा जाता, जब मैं कदम रखता हूं तो लगता है जैसे किसी ने पीठ में असली छुरा मार दिया हो ।

अपने ग्रड्डे पर तो ग्रौर भी कबाड़ा हो गया है । हमारी ग्रसली जापान की बनी दूरबीन टैलीस्कोप टूट कर गिरा पड़ा है । कार के टायर का कप उड़ कर यहां ग्राया ग्रौर ठीक म्हारे टैलीस्कोप को लग गया । यू समझ लो हमारी ग्रांखें जाती रहीं, हम अंधे राबिन हुड बन गये । ग्रब कैसे सड़क पर हम नजर रख पायेंगे ?

चूहे इधर ग्रा, तुझसे मुझे एक जरूरी बात करनी है । इतनी जरूरी कि दीवाना पढ़ने वालों को भी पता न लगे ताकि हमारी इज्जत खराब न हो ।

चलो हम तुम दोनों चीनी भाषा में बात करते हैं, दीवाना के पाठकों में से किसे ग्राती होगी चीनी भाषा ?
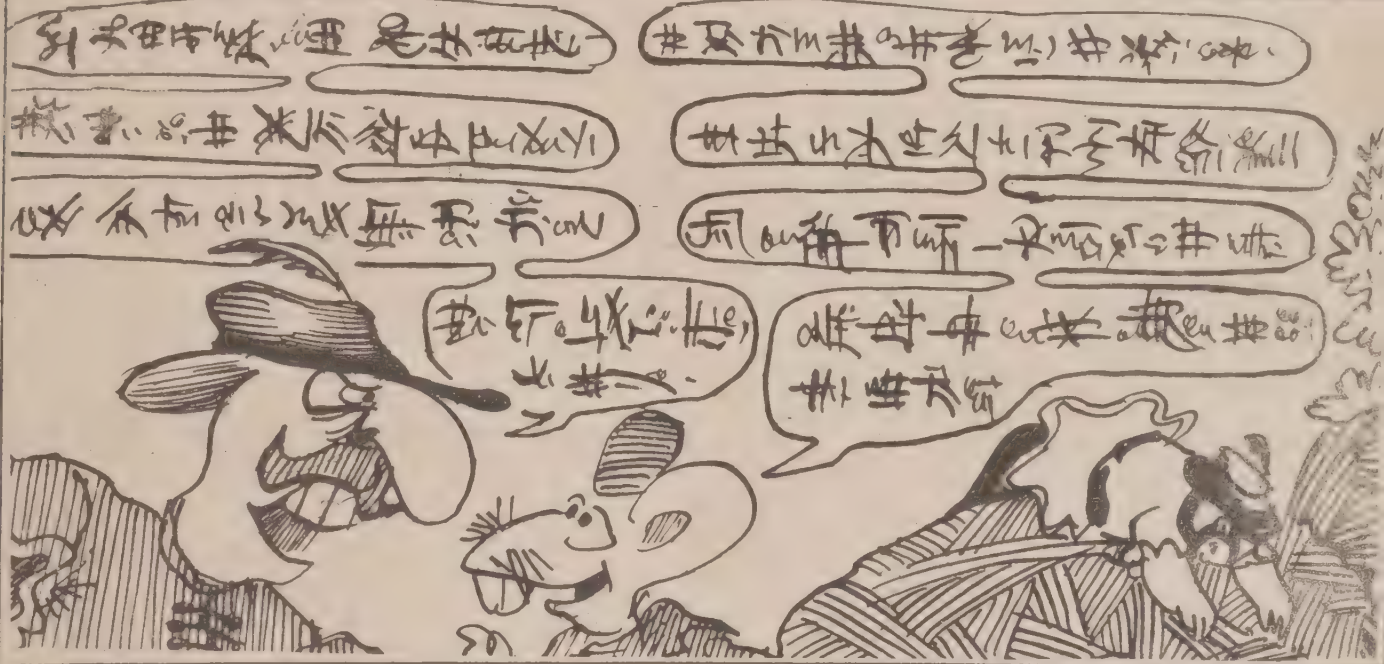
दीवाना के पाठकों की सूचना के लिए हिन्दी अनुवाद

पिलपिल—चूहे हमारी हालत खस्ता है । सिलबिल घायल है, हस्पताल में भर्ती करना पड़ेगा ।

चूहा—तुम्हें रॉबिनहुड बनने का कार्यक्रम स्थगित करना पड़ेगा । टेलिस्कोप भी टूट गया है, ग्रब यहां क्या करोगे ?

पिलपिल—लेकिन दीवाना पढ़ने वाले क्या सोचेंगे ? कहीं हमें घनचक्कर न समझ लें ।

चूहा—तुम फिक्र न करो । मुझे पहले ही पता था कि चौधरी चरणसिंह की सरकार की तरह ही तुम्हारा रॉबिन हुड प्रोग्राम भी कुछ ही देर का प्रोग्राम होगा । मैंने पहले ही ब्यान तैयार कर रखा था किसी को कोई शक नहीं होगा ।

सभी सुनने वालों को मेरा नमस्कार ! मैं लन्दन के लार्डस मैदान से गरीब चंद दोषी बोल रहा हूं । मैं खेद के साथ सूचित कर रहा हूं कि ग्रमीरों ग्रौर गरीबों के बीच रॉबिन हुड बैनिफिट टैस्टमैच स्थगित हो गया है । भारी वर्षा के कारण सारा मैदान डूब गया है । फिलहाल खेल शुरू होने की कोई सम्भावना नही है । ग्रभी ग्रभी ग्रम्पायर पिच का निरीक्षण करने गये हैं । ग्रगली सूचना तक सितार वादन सुनिये ।

पिलपिल-सिलबिल के नये कारनामे ग्रगले ग्रंक में पढ़िये ।

सुरेन्द्र भाई आजाद—नेपाल
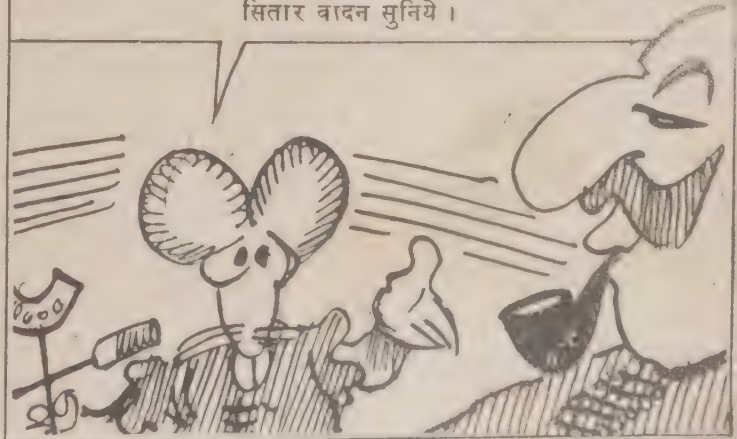
प्र० : क्या हिन्दुस्तान की महिलायें क्रिकेट मैच में भाग लेती हैं ?

उ०:हां ! भारत की महिला क्रिकेट टीम अंतर्राष्ट्रीय मैचों में भी भाग लेती है ।

अरुण, काकू, बाबू—पूसा, नई दिल्ली

प्र० : सुनील गावस्कर एवं सर डान ब्रेडमैन का टैस्ट रिकार्ड बताएं ? क्या सुनील ब्रेडमैन का रिकार्ड तोड़ सकते हैं ?

उ० : रिकार्ड तोड़ने या न तोड़ने का कोई खास महत्व नहीं है । डॉन ब्रेडमैन ने २९ शतक बनाये थे । एक ही दिन में टैस्ट मैच में ३०९ रन बनाये थे । गैरी सोबर्स का ८०३२ रनों का रिकार्ड है । यह केवल संख्याओं का खेल नहीं होता इसके कई पक्ष हैं । हो सकता है सुनील गावस्कर २९ से ज्यादा शतक मारें या ८०३२ से ज्यादा रन बनायें लेकिन केवल इसी से वह डॉन ब्रेडमैन या गैरी सोबर्स से श्रेष्ठ नहीं हो जाते । डॉन ब्रेडमैन बहुत ही आकर्षक बल्लेबाज थे । धुआंधार बल्लेबाजी करते थे, सारे क्रिकेट जगत पर छाये रहे । उनकी बैटिंग की श्रेष्ठता या गैरी सोबर्स की ऑलराउंड खेल की श्रेष्ठता को कोई चुनौती नहीं दे सकेगा ।

खेल की श्रेष्ठता के मामले में सुनील कभी डॉन ब्रेडमैन की तुलना नहीं कर सकते । हाल के दो तीन वर्षों में कैरी पैकर के कारण भारतीय टीम को वेस्टइंडीज व आस्ट्रेलिया की दूसरी तीसरी दर्जे की टीमों से टैस्ट मैच खेलना पड़ा । इन टैस्टों में बनाये रनों को टैस्ट स्तर के रन क्वालिटी के लिहाज से मानते हुए हिचक होती है । यदि डॉन ब्रेडमैन या सोबर्स को ऐसी टीमों में खेलने का अवसर मिला होता तो वे शायद ही किसी टैस्ट में आउट होते । पाकिस्तान के जहीर अब्बास को ही लीजिये उनके टैस्ट रन सुनील से बहुत कम हैं । लेकिन अधिकतर लोग जहीर को श्रेष्ठ बल्लेबाज कहेंगे ।

अतः आजकल के इन रिकार्डों का केवल कागज़ी महत्व है । श्रेष्ठता की कसौटी पर ये खरे नहीं उतरते ।

प्र० : भारतीय हाकी के गिरते स्तर का कारण मैं अधिकारियों की मनमानी और भाई-भतीजावाद मानता हूं । आपका क्या विचार है ? इसमें सुधार के लिए आपके क्या सुझाव हैं ?

उ० : वर्तमान सारे अधिकारियों को पकड़कर अरब महासागर में डुबो दिया जाये और फिर से भारतीय हॉकी का निर्माण हो।

घनश्याम गंगवानी—बिलासपुर (म. प्र.)

प्र० : इस समय किस देश की क्रिकेट टीम तेज, पक्की तथा सुदृढ़ है ?

उ० : वेस्टइंडीज । वेस्टइंडीज (पैकर खिलाड़ियों सहित) की टीम बहुत संतुलित है । धुंआंधार बल्लेबाजों और पांचों तूफानी गेंदबाजों सहित इस टीम का वर्तमान समय में सानी नहीं है ।

विविध समाचार

जिमी कानर्स का लटका

विश्व प्रसिद्ध टैनिस खिलाड़ी जिमी कानर्स ने व्यापारिक बुद्धि का एक नया उदाहरण प्रस्तुत किया है । उनकी बीबी पैटी गर्भवती है । जिमी ने अपनी व्यापारिक फर्म द्वारा यह निर्णय प्रकाशित किया है कि उनके बच्चे के पहले फोटो का मूल्य दो लाख सत्तर हजार रुपए होगा । जिसे पहला फोटो खींचने का शौक हो वह इतने रुपये दे और फोटो खींच ले । इस व्यापारिक बातचीत को जिमी की मम्मी चला रही हैं । जिम्मी की मम्मी ग्लोरिया कानर्स व्यापारिक बुद्धि में बहुत तेज हैं । सुना है कि अमृतराज बन्धुओं ने भी ग्लोरिया कानर्स को अपना व्यापारिक मैनेजर नियुक्त किया है ।

चोर हो तो ऐसा

जयपुर के प्रहलाद सिंह प्रसिद्ध फुटबाल खिलाड़ी हैं। पिछले दिनों जब वह बाहर थे तो उनके घर चोरी हुई । चोरी में उन्हें मिले कई कप और गोल्ड मैडल चले गये लेकिन चोर उस मैडल को छोड़ गया जो प्रहलाद सिंह को ऐशियन स्कूल फुटबाल चैम्पियन शिप में सिंगापुर के साथ भारत को संयुक्त विजेता घोषित किये जाने पर मिला था। यह सिलवर मैडल है और प्रहलाद सिंह को सबसे ज्यादा प्रिय है ।

आपको याद होगा कि इंगलैंड के प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी कॉलिन काउड्रे के घर ऐसी ही चोरी हुई इसमें चोर उनके क्रिकेट जीवन में कमाये सारे स्मारक, कप व मैडल चुरा ले गया था । भारत के ही प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी टूनामुर रहमान के घर भी ऐसी ही चोरी हुई थी ।

मकान तोड़ कैराटे

अमरीका में १५ कैराटे एक्सपर्टों ने छः घंटों में छः कमरों वाला एक मकान तोड़कर गिरा दिया। इस तमाशे को २०० आदमियों ने देखा । उन्होंने केवल हाथों का प्रयोग किया ।

प्रूडेन्शल कप

लीजिये साहब, कहां तो सिलेक्टरों का दावा था कि इस बार हम प्रूडेन्शल कप में बड़ा तीर मार लेंगे, हुआ क्या ? भारत की यह स्थिति रही ।

१. वेस्टइंडीज
२. इंगलैंड
३. पाकिस्तान
४. न्यूजीलैंड
५. श्री लंका
६. आस्ट्रेलिया
७. भारत
८. कनाडा

(यह रिकार्ड इस वर्ष के इंगलैंड टैस्टों से पहले के हैं)

अशोक कुमार सेठी—सगरिया

प्र० : कृपा मुझे बताइये कि जो खिलाड़ी कैरी पैकर शृंखला में गये हुए हैं क्या वह खिलाड़ी अपनी-अपनी टीम में वापिस आ जायेंगे या नहीं ?

उ० : भारत से तो अभी कोई गया नहीं है और उधर पैकर भी अपनी शृंखला समाप्त करने की सोच रहा है ।

तीस मारखां

आगे से हमेशा अपनी क्रिकेट टीम के साथ हम विदेशी दौरों पर इस बन्दर को भेजेंगे ताकि हारने पर कप्तान व मैनेजर सारा दोष इस बन्दर के मत्थे मढ़ सकें ।

खेल-खेल में

दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

बन्द करो बकवास

जिन्दगी प्यार की दो-चार घड़ी होती है।

बन्द करो बकवास, अगर मैनेजर साहब ने देख लिया तो तुम्हारी नौकरी भी दो-चार घड़ी ही रहेगी।

बारह बजे क़ी सुइयों जैसे हम दोनों मिल जाएं ऽऽऽ

बन्द करो बकवास। मेरा मजाक उड़ाती हो ? साढ़े छः या सवा तीन क्यों नहीं कह सकतीं ?

जब इश्क कहीं हो जाता है तो ऐसी हालत होती है. महफिल में जी घबराता है तन्हाई की आदत होती है।

बन्द करो बकवास, ऐसी हालत इश्क से नहीं—तुम्हारे इस यूजलेस ड्रिन्क के कारण हुई है। अब जल्दी से बताओ कि बाथरुम कहां है ?
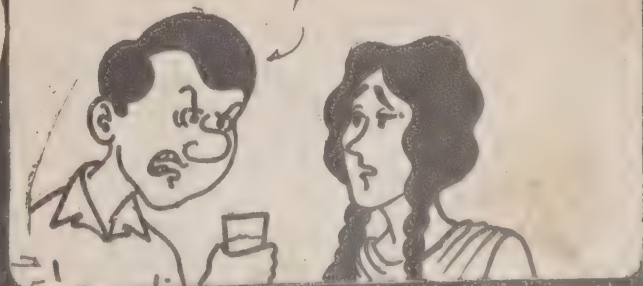
जूडो कैराटे कैसे सीखें ?

यह भी हो सकता है कि आप रास्ते चलते ठोकर खा कर गिर पड़ें या बरसात में फिसलकर गिर पड़ें। ऐसी स्थिति में भी आप गंभीर चोट के शिकार हो सकते हैं, लेकिन यदि आपने गिरने का बाकायदा अभ्यास कर लिया है—तो आप कहीं भी, कभी भी—आकस्मिक में गिरें या लड़ाई में या खेल में, आप तुरन्त संभल कर शरीर के मुख्य अंगों को बचाते हुए बिना चोट खाए गिर सकते हैं और सही ढग से गिरकर तुरन्त उठ भी सकते हैं। साथ ही यदि आप लड़ाई में गिर गए हैं और आपको गिरने का अच्छा अभ्यास हो गया है तो आप गिरते-गिरते विरोधी पर चोट भी कर सकते हैं और स्वयं गिरने के साथ-साथ उसे भी गिरा सकते हैं।

यदि आपको अपने ऊपर इतना भरोसा हो जाये कि आप किसी भी दिशा में, कैसे भी गिरें आपको चोट नहीं लग सकती और आप तुरन्त खड़े भी हो सकते हैं तो आप शत्रु से निडरता से मुठभेड़ कर सकते हैं; क्योंकि आप को विश्वास है कि यदि शत्रु आपको गिरा भी देता है तो आप बिना चोट खाए फुर्ती से उठ भी सकेते हैं।

आप कहीं गिरें या कोई आपको गिराए तो केवल चार प्रकार से आप गिर सकते हैं—(१) आगे की ओर (२) पीछे की ओर (३) दायीं ओर (४) या बायीं ओर। यह अलग बात है कि इन चार प्रकार से गिरने में आपके शरीर का कौन सा भाग पहले जमीन पर पड़ना है। लेकिन इतना जरूर याद रखिये कि बहुत तीव्र गति से गिरने पर शरीर के दूर वाले हिस्से को नुकसान पहुँचता है जैसे, मान लीजिए आप तेजी से भाग रहे हैं। यदि ऐसे में आपको ठोकर लग जाए तो तो आप आगे की ओर सिर के बल ही गिरेंगे। इस लिए गिरते समय गति का ध्यान रखना भी जरूरी होता है।

अब हम सही ढंग से गिरने के प्रकार और उठने का तरीका बतायेंगे।

आगे की ओर गिरते समय

आगे की ओर गिरते समय हमेशा एक बात को ध्यान में रखें कि यदि आप धीमी गति से गिर रहे हैं तो हाथों को आगे की ओर फैला लीजिए और उँगलियों को भी सीधा रखिए। हाथों को कोहनी पर से थोड़ा सा मोड़े रखिए। ताकि जब आपके हाथ जमीन पर टिकें तो हाथों में लचक बनी रहे और गिरने से आपके हाथों को झटका न लगे। गिरते समय शरीर को अकड़ाने की जरूरत नहीं है, बल्कि ढीला छोड़ दीजिए।

जब आपके हाथ जमीन पर टिक जायें तो उन्हें कोहनी से थोड़ा सा और मोड़ लीजिए। इससे हाथों में स्प्रिंगनुमा लचक आ जाएगी और आपके हाथ शरीर के भार को आसानी से झेल जायेंगे। गिरने के साथ ही जब आप संभल जायें तो हाथों को एकदम सीधा कर लें और छाती को आगे की ओर करके एक पैर पेट की ओर से निकालते हुए आगे बढ़ा लें और उस पैर पर तथा हाथों पर शरीर का वजन डालते हुए उठ खड़े हों। ध्यान रखें कि जितनी तेजी से आप गिरते हैं, लगभग उतनी ही फुर्ती से उठने की कोशिश भी करनी चाहिए।

और मान लीजिए यदि आगे की ओर गिरने की गति तेज है तो ऐसे में गिरते समय बचाव के लिए हाथों को जमीन पर टेकना उचित नहीं है क्योंकि तेज गति से गिरते समय हाथ आपके शरीर का भार संभाल नहीं पायेंगे। इसका नतीजा यह होगा कि आपके हाथों में भी चोट लगेगी और सिर या चेहरा भी जख्मी हो सकता है। इसलिए तेजी से आगे गिरते समय सिर को मोड़कर इतना नीचे को झुकाइए कि आपका चेहरा आपके घुटनों के पास तक पहुंच जाए और अब आप गिरें तो आपकी पीठ का कंधे के जोड़ों वाला हिस्सा पहले जमीन पर लगे और आप शरीर को पहिए की तरह कलाबाजी खाते हुए आगे की ओर लुढ़क जाने दें। उसके बाद पैरों को घुटनों से इतना मोड़ लें कि जमीन पर पैरों की एड़ी का स्पर्श पहले हो। चूंकि इस तरह से गिरने में चोट लगने की अधिक संभावना रहती है इसलिए गिरने के इस सही ढंग का यह अभ्यास कर लेना उचित होगा। गिरने का यह अभ्यास करते समय जमीन पर गद्दे बिछा लें अथवा किसी घास वाले मैदान में यह अभ्यास करें, ताकि शरीर को किसी प्रकार की हानि न पहुंचे।

घुटनों को बैठाने की स्थिति तक मोड़ लें। हाथों को नीचे की ओर लटका लें। सिरों को घुड़नों के पास तक झुका लें। ऐसी स्थिति में आपका शरीर पीठ की ओर से गोलाकार स्थिति में आ जाता है।

केवल घुटनों को थोड़ा-सा ऊपर उठायें, लेकिन चेहरे को घुटनों से ही सटाये रखें और तीर द्वारा दिखाई गई आगे की दिशा की ओर शरीर को झुकायें। यह ध्यान रहे कि पैर के दोनों घुटनों के बीच का अन्तर इतना हो कि घुटनों के पास सटाये हुए मुंह का नाक और आँखों वाला हिस्सा घुटनों से स्पर्श न करे। साथ ही आप पीछे की ओर देख भी सकें।

घुटनों को सीधा कर दें जैसा कि खड़े होने की स्थिति में रखते हैं, लेकिन कमर से शरीर को उतना ही मोड़े रखें। थोड़ा सा आगे की ओर शरीर को और झुकायें।

शरीर को इतना आगे झुकायें कि गोलाकार स्थिति में लुढ़कते समय सबसे पहले गद्दे पर पीठ का कंधों वाला भाग लगे। आपका सिर गद्दे का स्पर्श न कर पाये, यह ध्यान रखें।

शेष आगामी अं'

खानदान
(बनाम खानदोन)
जूले अन्दर,
सुदक्षिणा पण्डित,
सूजी कुमार
इन्दू
न रो पराई
गैराज

ले बेटा, खाना खाले! हमारी यही पोज़ सारे पोस्टरों पर छपेगी लेकिन फिल्म में ऐसी कोई सीन दिखाई नहीं देगी!
वह कैसे माँ?
तू अभी नादान है, इन बातों को नहीं समझ सकेगा बेटा, ले खा!

यह हैं गौरी शंकर के बड़े पुत्र विकास जो अपनी जोरू के ग़ुलाम हैं! फ़िल्म के विलेन होने के कारण दुनिया भर की बुरी आदतें और बेशर्मी इनमें समाई हुई हैं!

यह हैं गौरी शंकर के छोटे सुपुत्र रवि! हीरो होने के नाते इनमें सारे अच्छे गुण समा गए हैं! ये कॉलेज में या घर में कभी पढ़ाई करते नज़र नहीं आएँगे! बस लड़कियों के साथ छेड़छाड़ ही करते रहेंगे... फिर भी जनाब फर्स्ट क्लास फर्स्ट डिविजन में पास हो जाते हैं!
COLLE

क्यों बे बदमाश, तुझे शर्म नहीं आती है? एक मामूली जूनियर आर्टिस्ट होकर तू टॉप की हीरोईन सुदक्षिणा के साथ छेड़छाड़ करता है?
मुझे माफ़ कर दो रवि! आज के बाद मैं हर लड़की को अपनी बहन समझूंगा पर आप ने तो कभी किसी....

अबे मेरी बात तो और है! मैं फिल्म का हीरो हूं! कालिज की हर लड़की को छेड़ने का मुझे अधिकार है!

क्या तुम कभी घर वक्त पर नहीं आ सकते? तुम्हें रोज़ रात को डाटने के लिए मुझे भी रात-रात भर जागना पड़ता है! नींद खराब होती है न!
हाँ पिताजी वह तो है!
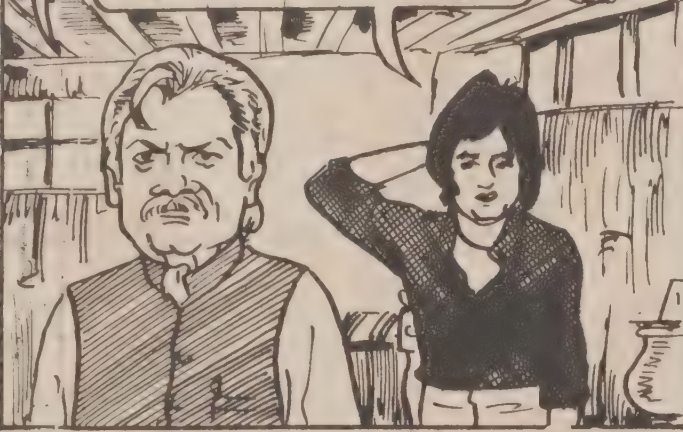
बेटा, क्या तुम ऐसा नहीं कर सकते कि घर से निकल ही जाओ! तुम्हारे घर पर आने जाने का चक्कर नहीं रहेगा तो मैं भी आराम से सो सकूंगा!
बड़ा अच्छा आईडिया है, डैडी! आप आराम से सोएंगे तो मैं घर कब आऊंगा आपको पता ही नहीं चलेगा!

और डैडी, मैं अपनी हीरोइन से भी बड़े मज़े से मिल सकूंगा! खूब अच्छा अच्छा खाना खिलाएगी वह मुझे!
ठीक है बेटा, जिसमें तू खुश उसमें मैं खुश! वैसे भी मुझे क्या लेना देना है! इन्टरवेल से पहले ही मेरी डैथ हो जानी है!
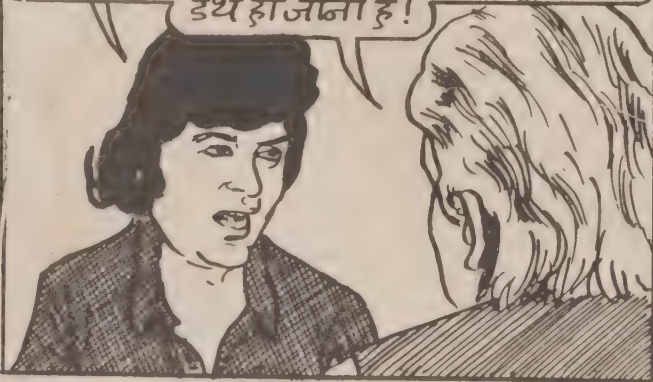
डैडी, मुझे बैंक में कैशियर की नौकरी मिल रही है, तनखाह पाँच सौ रूपए महीना है!
पर बेटा इस मंहगाई के ज़माने में पाँच सौ रूपए में तुम गुज़ारा कैसे कर सकोगे?

वैसे तो आप ठीक ही कह रहे हैं, डैडी! पर आप देखना, पाँच सौ रूपये में मैं एक आलीशान कोठी ले लूंगा, नए नए फैशन और डिज़ाईन के फ़र्नीचर खरीद लूंगा, फ्रिज, टी॰वी॰, कूलर सारी चीज़ें घर में होंगी! एक खूबसूरत आया भी रख लूंगा!
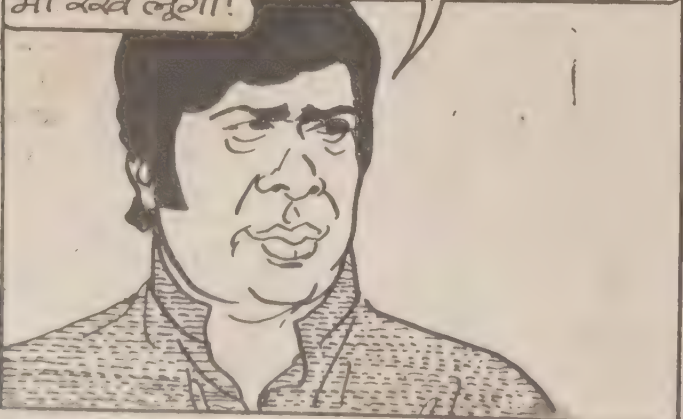
ओ, इनका तो हार्ट फेल हो गया सुनकर! दक़्यानूसी आदमी हैं न, ये क्या जानें आज कल की फिल्मी कहानियों को!

हमने बुढ़िया को अलग करके ठीक नहीं किया! मुझे खबर मिली है कि रवि उसे हर महीने एक हज़ार रूपए भेजता है! उसे यहाँ हमारे साथ लाकर रखलो! मैं उसके बदले साईन करके सारे पैसे हड़प लिया करूंगी!

अरे इसमें मुझसे क्या पूछना? सारे गैर कानूनी काम हमें ही तो करना है! फ़िल्म के विलेन जो ठहरे!
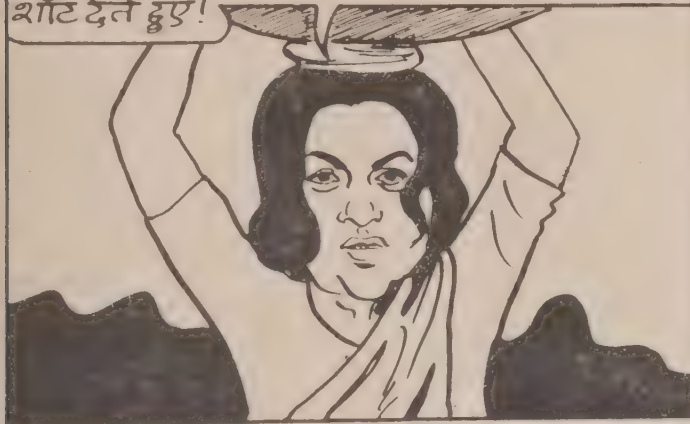
ट्रिंग ! ट्रिंग !! ट्रिंग !!!
लाल साइकिल पे हो के सवार,
स्कूल आ पहुँचा बचत कुमार।
ट्रिंग! ट्रिंग!! ट्रिंग!!!
देखी जो उसकी
साइकिल नयी
भोलू हुआ उदास,
"काश इसे मैं भी ले पाता-
पैसे जो होते पास।"
शेर बबर इतने में आया।
आते ही उसने हुकुम सुनाया ॥
"नयी साइकिल इधर लाओ,
तुम अपनी कक्षा में जाओ"
बोला बचत कुमार,
"दूँगा नहीं मैं अपनी साइकिल
चाहे करो दहाड़, चीख पुकार।
जमा किये हैं मैंने पैसे,
और खरीदा इसको।
ये तो केवल मेरी है
क्यों दूँ और किसी को ?"
'कांव' 'कांव' कर शोर मचाया,
कौवे ने सबको पास बुलाया।
बोला "कैसे पकड़ें उसको
और मज़ा लें साइकिल का!"
किया सभी ने शुरू सोचना,
और बनायी एक योजना।
"बचत कुमार जब आयेगा।
लम्बू दौड़ लगायेगा।
बचत कुमार घबरायेगा,
तब बक-बक शोर मचायेगा।
पेटूराम रोकेगा रास्ता
टट्टू सिंह तब देगा धक्का।
गिर जायेगा बचत कुमार
होकर हक्का बक्का।
तब हम सब साइकिल पायेंगे,
मन की मौज मनायेंगे।"
ZOOM
उधर लम्बू ने लम्बी दौड़ लगाई। इधर बचत कुमार ने साइकिल तेज भगाई।
पल में हो गया वह रफूचक्कर, सब देखते रहे हाथ मल-मल कर।
पेड़ पे बैठा तोता डोला,
टें-टें करके एकदम बोला।
"जो बच्चे हैं पैसा बचाते,
वे जीवन को सुखी बनाते।
जो बच्चे हैं पैसा उड़ाते,
आगे चलकर वे पछताते"
स्टेट बैंक
आइए, साथ बढ़ें!
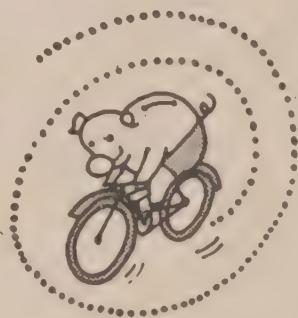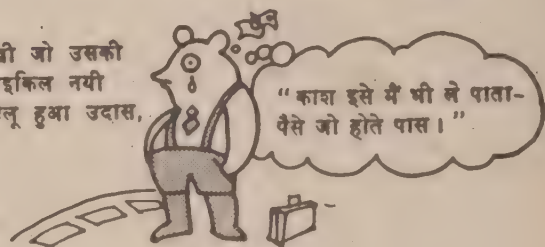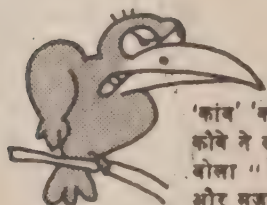
सवाल यह है ?
क्या राजनारायण का भी कोई जवाब हैं ।
राजनारायण हवाई जहाज में बैठे, तो जहाज में गड़बड़ हो गई ।
पर इस हवाई हादसे में, राजनारायण बाल बाल बच गए ।
इसके बाद उन्होंने कार में अपना सफर शुरू किया ।
कार एक पेड़ से जा टकराई । पर राजनारायण का बाल भी बांका नहीं हुआ ।
फिर वह एक ट्रक में आगे बढ़े ।
ट्रक बिजली के खम्बे से टकरा कर एक दीवार में घुस गया । पर राजनारायण का कुछ नहीं बिगड़ा ।
इसके बाद वह एक साईकल रिक्शा में बैठे । जो उनके बोझ से बैठ गई ।
इसका मतलब तुम क्या समझे ?
राजनाराण के बोझ से चाहे देश का भट्ठा बैठ जाए । पर राजनारायण का कुछ नहीं बिगड़ेगा ।
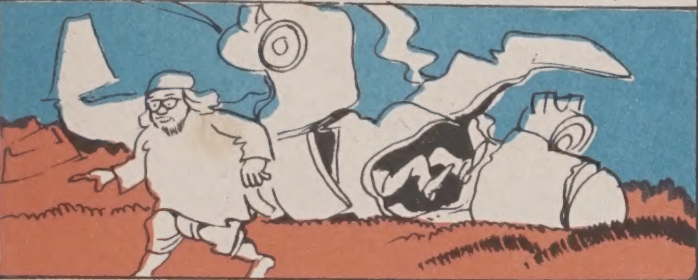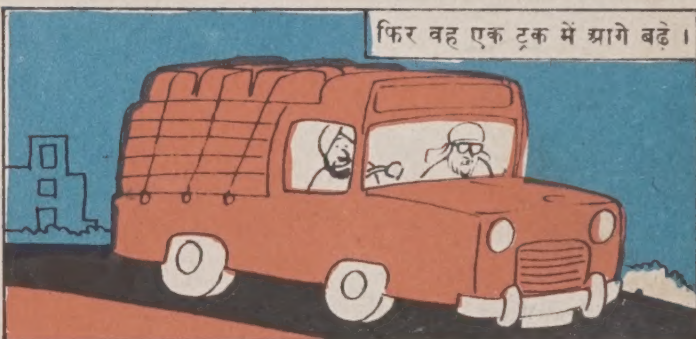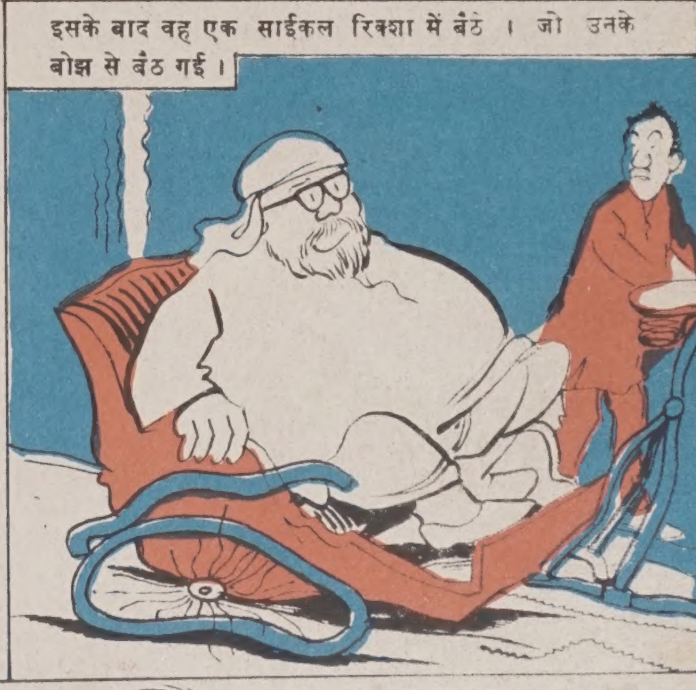
दीवाना-कैमल

रंग प्रतियोगिता

निःशुल्क प्रवेश

पुरस्कार जीतिए:

कैमल-पहला इनाम ३० रु.
कैमल-दूसरा इनाम २० रु.
कैमल-तीसरा इनाम १० रु.
कैमल-आश्वासन इनाम ५
दीवाना-आश्वासन इनाम ५
कैमल-सर्टिफिकेट १०

केवल १२ वर्ष तक के विद्यार्थी प्रतियोगितामें शामील हो सकते हैं। उपर दिये गये चित्रमें अपने मनचाहे कैमल रंग भर दिजिए। अपने रंगीन प्रवेश-पत्र नीचे दिये गए पत्ते पर भेजिए, दीवाना, ८-बी, बहादूर शहा जाफर मार्ग, नयी दिल्ली ११०००२
परिणाम का निर्णय अन्तिम निर्णय होगा। और कोई भी पत्रव्यवहार, नहीं किया जाएगा।

नाम.. **उम्र** ....

पता ....

कृपया ध्यान रखिए कि पूरा चित्र पेंट किया जाये।

चित्र भेजने की अंतिम तारीख: २५-१०-७६

CONTEST NO.11

VISION

मदहोश

क्यों भई हंसने की क्या बात है।

यह तो मजेदार जानवर है।

मदहोश होश में आ।

मैं हंस नहीं रहा, मैं गुस्से में पूछ रहा हूं कि मेरी टोपी में छेद किसने किया है।

अन्त्योदय कार्यक्रम
की दीवानी सीमायें

आपको पता ही होगा कि राजस्थान में अन्त्योदय कार्यक्रम का बड़ा शोर है। इस कार्यक्रम में समाज के सबसे गरीब व्यक्तियों की सरकार सहायता करती है। हाल में ही एक खबर पढ़ने को मिली कि इस कार्यक्रम के अन्तर्गत सरकार ने एक भिखारी को सितार खरीदने के लिए पांच सौ रुपये कर्ज दिलवा दिये ताकि वह सितार बजाकर ज्यादा भीख मांग सके। सबको पता है कि भीख मांगना समाज विरोधी काम है। इसे समाप्त करने का प्रयत्न करना चाहिये, न कि इसे प्रोत्साहन देने का। अगर सरकार के सोचने का यही हाल रहा तो आगे चल कर यह भी हो सकता है……

सैंधमार को सैंध लगाने की विजली की आटोमैटिक मशीन खरीदकर दी जाये।

डाकुओं को टैलीस्कोपिक रायफल खरीदने के लिये सरकारी सहायता दी जाये।

अन्त्योदय केन

वहू जलाने की इच्छुक सासों को पैट्रोल जैली का केन अनुदान के रूप में दिया जाये। पैट्रोल जैली जल्दी आग पकड़ता है।

वहुरुपिये धोखेवाजों व ठगों को भेष बदलने के लिये भेष बदलने के सामान वाले किट मुहय्या किये जायें।

अन्त्योदय सूटकेस

स्मगलरों को दोहरे तल्ले वाले सूटकेस पेश किए जायें जिनमें वे हीरे व सोने के बिस्कुट स्मगल कर सकें। अन्त्योदय को कस्टम वाले बगैर जांच किए जाने दें।